उन्नयन

"महाविद्यालय पत्रिका : उत्तराखण्ड राज्य रजत जयंती वर्ष (2025–26) विशेषांक"

स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट

जिला–अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

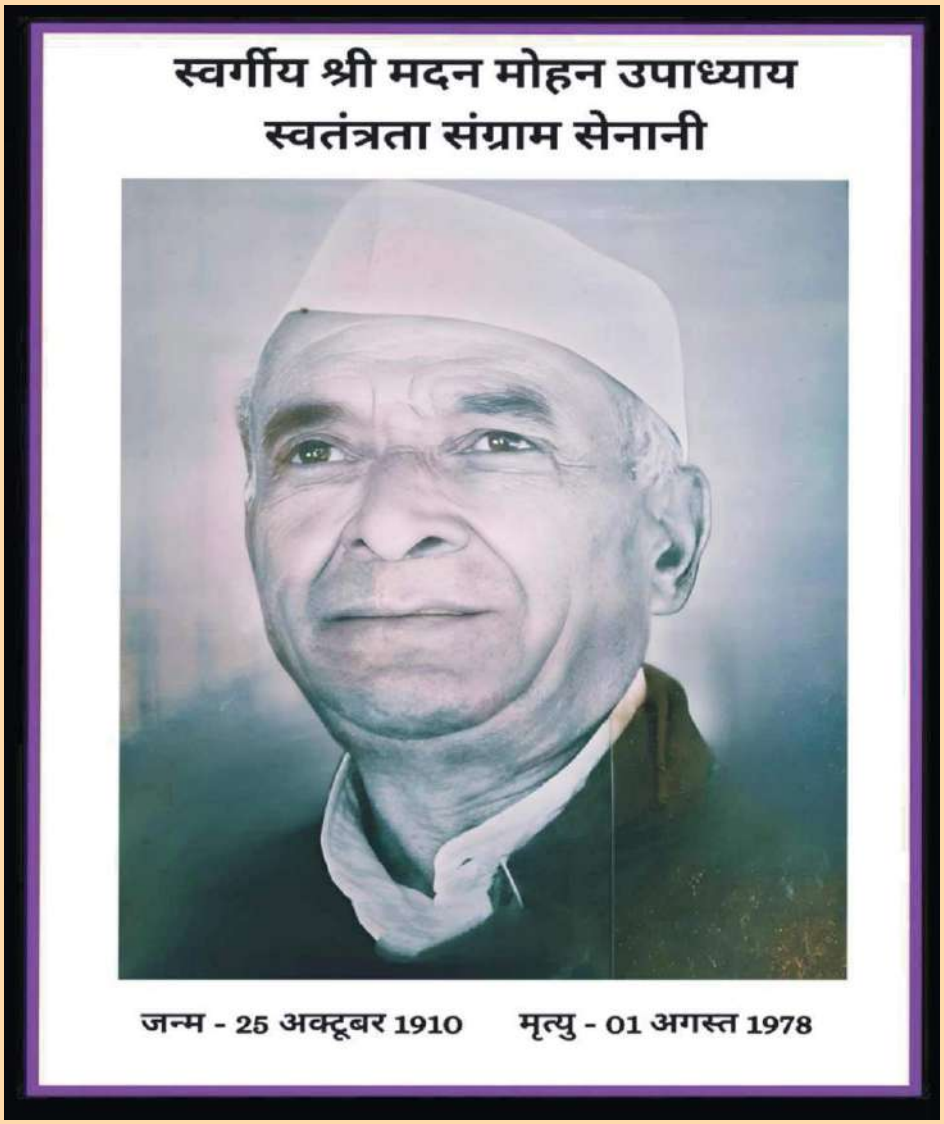

जीवन परिचय

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय का जन्म 25 अक्टूबर 1910 बमनपुरी, द्वाराहाट (अल्मोड़ा) में हुआ। वर्ष 1926 में, मात्र 16 साल की उम्र में प्रथम बार नैनी जेल इलाहाबाद गए। वर्ष 1936 में इलाहाबाद से वकालत की शिक्षा ग्रहण की। वर्ष 1939 में कांग्रेस के प्रांतीय एवं राष्ट्रीय कमेटी के सदस्य बने।

1940 में अल्मोड़ा जनपद के पहले सत्याग्रही के रूप में मदन मोहन उपाध्याय गिरफ्तार हुए। 1942 में जब 9 अगस्त को भारत छोड़ो आंदोलन के आह्वान के साथ कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व गिरफ्तार कर लिया गया था तब कुमाऊं में आंदोलन को धार देने का कार्य मदन मोहन उपाध्याय ने किया। शुरुआत में ही वह पुलिस के हत्थे चढ़े लेकिन भेश बदलकर भागने में कामयाब रहे फिर मासी (अल्मोड़ा) के पास पकड़े गए लेकिन वापस नैनीताल लाते हुए गेठिया के पास से भागने में कामयाब हुए। वर्ष 1944 में डिफेंस ऑफ इंडिया एक्ट के तहत 25 वर्ष की कालापानी की सज़ा हुई।

वर्ष 1952 में वह पहले विधानसभा चुनाव में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की ओर से रानीखेत से विधायक चुने गए। उत्तर प्रदेश विधान मंडल के उपाध्यक्ष रहे। रानीखेत एवं द्वाराहाट क्षेत्र के आधारभूत विकास के लिए उनके द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए. जिनमें रानीखेत का प्रसिद्ध सिविल अस्पताल रानीखेत का विद्युतीकरण और द्वाराहाट रानीखेत मोटर मार्ग जैसे निर्माण कार्य महत्वपूर्ण हैं। 01अगस्त 1978 में रानीखेत में मदन मोहन उपाध्याय का देहावसान हुआ।

स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय जी के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए द्वाराहाट महाविद्यालय का नाम " स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट" रखा गया।

''उन्नयन''

(उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयन्ती वर्ष विशेषांक)

2025-26

संरक्षक/प्राचार्य
डॉ. डी. सी. पन्त

मुख्य संपादक
डॉ. नाजिश खान

संपादक मण्डल
डॉ. हेमचन्द्र दुबे
डॉ. पूनम पन्त
डॉ. रिजवाना तबस्सुम
डॉ. स्वाती जोशी

मुद्रकः-
उत्तरायण प्रकाशन, हल्द्वानी (नैनीताल) फोन- 221125

शुभकामना संदेश

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून - 248001
फोन : 0135-2650433
0135-2716262
फैक्स : 0135-2712827
कैम्प कार्यालय
फोन : 0135-2750033
0135-2750344
फैक्स : 0135-2752144

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट जनपद-अल्मोड़ा द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका ''**उन्नयन**'' (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) का प्रकाशन किया जा रहा है। शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला होती है। उच्च शिक्षण संस्थान न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्यों के संवर्धन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस दृष्टि से किसी भी महाविद्यालय की पत्रिकाएं विचारों की अभिव्यक्ति, सृजनात्मकता के विकास तथा बौद्धिक विमर्श का सशक्त माध्यम होती हैं। ''**उन्नयन**'' पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभाएं चिंतन एवं रचनात्मक ऊर्जा को मंच प्रदान करने का सराहनीय प्रयास है। मुझे आशा है कि उक्त पत्रिका में महाविद्यालय की विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं को अपने नवीन विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा, जो नि:संदेह महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं के साथ-साथ सभी पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

मेरी ओर से राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट जनपद-अल्मोड़ा के समस्त महाविद्यालय परिवार को पत्रिका ''**उन्नयन**'' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

(पुष्कर सिंह धामी)

शुभकामना संदेश

डॉ. धन सिंह रावत
मंत्री
चिकित्सा स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा
सहकारिता, उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा
विद्यालयी शिक्षा

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
कक्ष सं. : 20
फोन : (0135) 2666410
फैक्स : (0135) 2666411

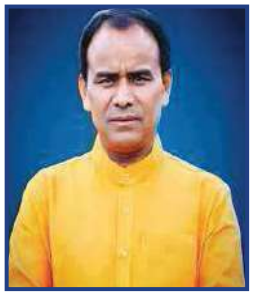

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट (अल्मोड़ा) गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी पत्रिका "**उन्नयन**" का (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा एवं छात्र-छात्राओं में मौलिक लेख के प्रति रूचि उत्पन्न होगी, जो उनके बौद्धिक स्तर को उच्च शिखर की ओर ले जाने का कार्य करेगी।

मैं राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट (अल्मोड़ा) की वार्षिक पत्रिका "**उन्नयन**" के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(डॉ. धनसिंह रावत)

शुभकामना संदेश

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट
कुलपति

मो0- +91 7579138434
ई-मेल : vessju@gmail.com

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट, अल्मोड़ा के द्वारा **''उन्नयन''** (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्र-पत्रिकाएं हमारे विद्यार्थियों को रचनात्मक बनाती हैं। पत्रिकाओं के प्रकाशन होने से विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं का विकास होता है। पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों की रचनात्मकता क्षमताएं बढ़ती हैं। विद्यार्थी हमारे देश के कर्णधार हैं। विकसित भारत बनाने के लिए हमारे पर्वतीय क्षेत्र के विद्यार्थी भी सामाजिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, कला, विज्ञान आदि विविध क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। अत: शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे विकसित भारत बनाने के लिए विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करें। विद्यार्थियों को अपने देश, समाज, परिवेश और अपनी जड़ों से जोड़े रखना आवश्यक है। मैं यह आशा करता हूं कि इसके लिए यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों को प्रेरित करेगी।

मैं **'उन्नयन'** (उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष) पत्रिका के प्रकाशन के लिए राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट (अल्मोड़ा) के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त जी, संपादक एवं संपादक मंडल, महाविद्यालय के समस्त शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षणेतर कर्मियों को अपनी ओर से शुभकामनाएं देता हूं।

शुभमस्तु!

(प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट)

शुभकामना संदेश

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Uttarakhand Open University

प्रोफेसर नवीन चन्द्र लोहनी
कुलपति

Professor Navin Chandra Lohani
Vice Chancellor

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतन्त्रता सेनानी राजकीय महाविद्यालय, द्वाराहाट (अल्मोड़ा) उत्तराखण्ड, द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "**उन्नयन**" का वर्ष 2025-2026 का (उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष) विशेषांक प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं रचनाकारों की सृजनशीलता, प्रतिभा और चिंतन का सजीव दर्पण होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "**उन्नयन**" पत्रिका न केवल ज्ञान-वर्धन और साहित्यिक अभिव्यक्ति का मंच बनेगी, बल्कि नवोन्मेष, शोध तथा सकारात्मक विचारों का भी प्रोत्साहित करेगी, तथा विद्यार्थियों और शिक्षा-जगत के लिए प्रेरणास्रोत भी सिद्ध होगी।

इस पत्रिका के संपादक मंडल, सहयोगी शिक्षकों तथा सभी लेखक-विद्यार्थियों को उनके समर्पण और उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आने वाले वर्षों में "**उन्नयन**" इसी प्रकार नई ऊँचाइयों को छूती रहेगी और महाविद्यालय का गौरव बढ़ाती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

मंगलकामनाओं सहित।

(प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी)

शुभकामना संदेश

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी - 263139 (नैनीताल)

E-mail - highereducation.director@gmail.com

डॉ. विश्वनाथ खाली

निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक: 5758/2025-26

दिनांक: 09 जनवरी, 2026

शुभकामना संदेश

महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट (अल्मोड़ा) अपनी पत्रिका "**उन्नयन**" (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जायेगी जिससे छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा औार उनके जीवन-दर्शन, कार्य-संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र-छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ. बी.एन. खाली)

शुभकामना संदेश

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

क्षेत्रीय कार्यालय, दून विश्वविद्यालय परिसर, फैकल्टी लॉज, देहरादून-148001

E-mail - jdhedehradun@gmail.com

डॉ. आनन्द सिंह उनियाल

संयुक्त निदेशक (उच्च शिक्षा)

दिनांक: 15 -12- 205

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट (अल्मोड़ा) अपनी वार्षिक पत्रिका ''**उन्नयन**'' (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होंगे।

मेरी ओर से ''**उन्नयन**'' पत्रिका प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डॉ. आनन्द सिंह उनियाल)

शुभकामना संदेश

मदन सिंह बिष्ट
विधायक- द्वाराहाट (48)

उत्तराखण्ड सरकार

निवासः-
ग्राम- कनखलगाँव,
पो.- बग्वालीपोखर
जिला- अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
मो.- 8958055555, 7055674788

सदस्य विधान सभा
उत्तराखण्ड

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट (अल्मोड़ा) अपनी वार्षिक पत्रिका ''**उन्नयन**'' (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में छात्र/छात्राओं तथा जनसामान्य हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जायेगा। जिससे छात्र/छात्राओं एवं समाज के सभी वर्ग लाभान्वित होंगे।

मैं वार्षिक पत्रिका ''**उन्नयन**'' (वर्ष 2025-26 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती वर्ष विशेषांक) के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों एवं छात्र/छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(मदन सिंह बिष्ट)

प्राचार्य की कलम से...

स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट (अल्मोड़ा) की पत्रिका ''**उन्नयन**'' का उत्तराखण्ड राज्य रजत जयंती वर्ष (2025-26) विशेषांक प्रकाशित कर समस्त प्रध्यापक, कम्रचारी एवं छात्र छात्राओं को सौंपते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। 09 नवम्बर 2025 को उत्तराखण्ड राज्य के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पूरे प्रदेश में रजत जयंती वर्ष मनाए जाने के उत्साह को देखते हुए महाविद्यालय की पत्रिका ''**उन्नयन**'' के उत्तराखण्ड राज्य रजत जयंती वर्ष विशेषांक (वर्ष 2025-26) को प्रकाशित करने की प्रेरणा मिली। जिसके फलस्वरूप आज ''**उन्नयन**'' पत्रिका का विशेषांक आपके सम्मुख है। जिसमें महाविद्यालय के वर्षभर की गतिविधियों को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उम्मीद करता हूं कि पत्रिका अपने प्रयास को सार्थक सिद्ध कर सकेगी।

पत्रिका के इस अंक में विद्वान प्राध्यापकों एवं छात्र छात्राओं के लेख, रचनात्मक विचार, कविताएं और विभिन्न विभागों के साथ-साथ एन एस एस, एन सी सी, रोवर्स रेंजर्स, क्रीड़ा, विभागीय परिषद् की रचनात्मक गतिविधियों को समेकित किया गया है। जिससे समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को निश्चित रूप से समग्र रूप से जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। ज्ञानवर्धक विचार और लेख विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होंगी ऐसी आशा करता हूं। नैक बी प्ल ग्रेड से प्रत्यायित इस महाविद्यालय को प्रगतिपथ पर अग्रेषित करने में यह पत्रिका उन्नयन का कार्य करेगी। बी.ए., बी.एस.सी., बी.काम., एम.ए., एम.एस.सी. में अध्ययनरत सभी छात्र/छात्राओं के लिए उन्नयन पत्रिका निश्चित रूप में महत्वपूर्ण एवं लाभदायी होगी। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका उन्नयन के उत्तराखण्ड राज्य रजत जयंती वर्ष विशेषांक (वर्ष 2025-26) को आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव और मन प्रफ्फुल्लित हो रहा है।

मैं हृदय से उन सभी विभूतियों को आभार व्यक्त कर धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर उन्नयन पत्रिका के लिए संदेश रूपी आशीर्वचनों से हम सभी को कृतार्थ किया है।

उन्नयन पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका की प्रधान सम्पादक प्रो नाजिश खान तथा सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूं, जिनके समग्र प्रयास से उन्नयन पत्रिका आपको समर्पित कर रहा हूं। अंत में, उन्नयन पत्रिका के प्रकाशक ''उत्तरायण प्रकाशन'' का भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अल्प समय में पत्रिका हम सभी को उपलब्ध की है।

(डॉ. डी.सी. पन्त)
प्राचार्य

संपादकीय

सृजन मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है। मनुष्य के पास अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए अनेक माध्यम हैं। पत्र-पत्रिकाएँ इस दिशा में अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है। शिक्षण संस्थाओं में पत्रिकाओं के प्रकाशन के माध्यम से छात्रों एवं स्टाफ की सृजनात्मक प्रतिभा का कुशल प्रकाशन होता है। इतना ही नहीं, पत्रिका किसी भी संस्था की विविध सांस्कृतिक तत्वों को स्वयं में समाहित किए सबका मार्गदर्शन करती है।

इस बार हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'उन्नयन' का विशेषांक इस लिहाज से उत्कृष्ट है कि इसमें उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयंती समारोह की विविध झलकियों के साथ-साथ कालेज में निरंतर हो रही पाठ्य और पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों की एक सतत विकासात्मक छविमयता भी है, 'उन्नयन' के इस विशेषांक में वर्तमान सत्र में आयोजित राज्य स्थापना दिवस रजत जयंती वर्ष कार्यक्रम आख्या सहित विविध विभागों समितियों की आख्या कालेज की नवोन्मेष विकास यात्रा से रू-ब-रू कराती है। छात्र-छात्राओं प्राध्यापकों आदि की सृजनात्मक अभिव्यक्ति भी इस पत्रिका को रोचक बनाने में सक्षम रही है। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्त सामग्री प्रासंगिक और समसामयिकता से परिपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शासन द्वारा निर्धारित नियमों आदि का अनुपालन करते हुए कालेज में और कालेज से इतर विविध नवाचारी भ्रमण आदि कार्यक्रमों के सम्यक आयोजनों की रूपरेखा को पत्रिका में यथोचित स्थान दिया गया है। छात्र-छात्राओं और स्टाफ के ज्ञान कौशल और अन्तर्निहित अभिव्यक्ति क्षमता को निखारने में पत्रिका कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है यह तो सम्मानित पाठकगण ही बताएंगे। हम आभारी हैं अपने प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी, माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत जी, माननीय विधायक जी श्रीमान् मदन सिंह बिष्ट जी सहित कुलपति जी सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल और उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के आशीर्वचनों से पत्रिका धन्य हुई है। महाविद्यालय के कर्मठ सम्मानित प्राचार्य डॉ. डी.सी. पंत ने पत्रिका हेतु अपना बहुमूल्य आशीर्वाद प्रदान कर इसे अत्यल्प समय में प्रकाशित करने का जो साहस दिखाया वह स्तुत्य है। उत्तरायण प्रकाशन हल्द्वानी के श्री घनश्याम भट्ट जी ने उदारतापूर्वक ससमय प्रकाशन कार्य पूर्ण कर पत्रिका को सुंदर, आकर्षक गैट-अप में कॉलेज को उपलब्ध कराया इस हेतु कालेज परिवार उनका धन्यवादी है।

पत्रिका विद्यार्थियों, स्टाफ और अभिभावकों को कॉलेज की नूतन विकासात्मक संस्कृति और सृजनशीलता से परिचित कराएगी। इसका पाठक जगत में सर्वत्र समादर होगा। ऐसी मनोकामना है।

Nazish Khan

● प्रो. नाजिश खान
संपादक

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस 09 नवम्बर 2025 (रजत जयंती समारोह)

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस 09 नवम्बर 2025 (रजत जयंती समारोह)

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस 09 नवम्बर 2025 (रजत जयंती समारोह)

विषय सूची

1.	उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस रजत जयन्ती समारोह की आख्या	डॉ. पूनम पन्त, इतिहास विभाग	5–6
2.	अल्मोड़ा झण्डा सत्याग्रह	डॉ. अंजुम अली, असि. प्रो. इतिहास विभाग	6–7
3.	गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध	सीमा , बी.कॉम पंचम सेमेस्टर	8–11
4.	वक्त	डॉ. हेमचन्द्र दुबे, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी	11
5.	उत्तराखण्ड के 25 वर्ष : सपना, विकास और संकल्प की यात्रा	रश्मि, एम.ए., तृतीय सेमेस्टर	12–13
6.	उत्तराखण्ड में स्टार्टअप संस्कृति: युवाओं के लिए नए अवसर	डॉ. अशोक कुमार, असि. प्रोफे. वाणिज्य वि.	13–15
7.	गुरू तेग बहादुर.....	रिया, बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर	16
8.	आधुनिक जीवनशैली में योग और मानसिक स्वास्थ्य: एक अनिवार्य संतुलन	प्रियंका जोशी, योग प्रशिक्षक	17
9.	Sacred groves and sacred lakes in Uttarakahand	Sharmishtha Mehra, Asstt. Prof. Zoology	18-19
10.	WHY STUDY PHYSICS?	Dr. B.P. Bahuguna, Asstt. Prof. Physics	19-20
विभागीय आख्याएं एवं विभागीय रिपोर्ट			21–50
11.	यूथ रेडक्रॉस इकाई तथा राष्ट्रीय कैडेट कोर		
12.	महाविद्यालय में प्रदत्त छात्रवृतियां तथा रोवर्स-रेंजर्स इकाई		
13.	गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस समारोह तथा साइबर भारत सेतु प्रशिक्षण: 2025-26		
14.	युवा संसद (तरुण सभा) समारोह 2025-26		
15.	एंटी ड्रग सेल: 2025-26 तथा राष्ट्रीय सेवा योजना		

16. भारतीय संविधान दिवस समारोह तथा अंतराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस
17. योग सत्र तथा रक्तदान शिविर 2025-26
18. Gaining Innovative Knowledge Educational Tour (BTKIT)
19. A Brief Report: World Summit of Disaster management (She for STEM Program)
20. Workshop Report: Faculty Orientation Program -
Dr Debjani Adhikari and Dr. Bhupendra Kumar
21. बौद्धिक सम्पदा अधिकार - श्री बिपिन चन्द्र सुयाल
22. Gaining Innovative Knowledge: Educational Tour (GPC)
23. Kalpana - She for STEM Program: A Report
24. मुख्यमंत्री विद्यार्थी शैक्षिक भारत दर्शन योजना
25. Ashtalakshami Darshan Youth Exchange Program
26. देवभूमि उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) 2025
27. Anti Drug Cell - Induction Meeting Report
28. Parent Protecting Innovation in India and Uttarakhand - Dr Swati Joshi
29. Nurturing Future Leadership Program - डॉ. आशा बी पार्छे

❖❖❖

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस रजत जयन्ती समारोह की आख्या

डॉ. पूनम पन्त
इतिहास विभाग

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस रजत जयंती समारोह मनाये जाने के सम्बन्ध में उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड शासन तथा निदेशक उच्च शिक्षा से प्राप्त निर्देशों के क्रम में स्व0 श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस रजत जयंती समारोह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं का आयोजन करने हेतु **कला संकाय, विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय परिषदों का गठन** कर सम्बन्धित परिषदों को तिथिवार प्रतियोगिताओं का आयोजन करने हेतु कार्य सौंपा गया था। इस हेतु सम्बन्धित परिषदों द्वारा आयोजित किये गये प्रतियोगिताओं की तिथिवार एवं बिन्दुवार आख्या निम्नवत् रूप में प्रस्तुत है।

विज्ञान संकाय- (दिनांक- 03-11-2025)

दिनाक 03-11-2025 को विज्ञान संकाय के निर्देशन में पोस्टर प्रतियोगिता में 27, क्विज प्रतियोगिता में 24 एवं एकल गायन प्रतियोगिता में 04 छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। पोस्टर प्रतियोगिताओं में उत्तराखण्ड में पलायन, जंगलों में आग, नशा उन्मूलन, एपण कला एवं पारम्परिक वेशभूषा इत्यादि पर छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न पोस्टरों का प्रदर्शन किया गया। प्रतियोगिताओं के आयोजन में प्राचार्य द्वारा गठित निर्णायक मण्डल द्वारा उपरोक्त प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर रहे छात्र-छात्राओं का प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हेतु चयन किया गया।

वाणिज्य संकाय- (दिनांक: 06-11-2025)

दिनांक 06-11-2025 को वाणिज्य संकाय के निर्देशन में रजत जयन्ती के तत्वाधान में **एकल नृत्य प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के (बी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम., एम.ए. व एम.एस.सी) 15 छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा **उत्तराखण्ड के पारंपरिक मेलों, त्योहारों व रीति रिवाजों की झलक** देखने को मिली। प्रतियोगिताओं के आयोजन में प्राचार्य द्वारा गठित निर्णायक मण्डल द्वारा उपरोक्त प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर रहे छात्र-छात्राओं का प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हेतु चयन किया गया।

कला संकाय (दिनांक-07-11-2025)

दिनांक 07-11-2025 को कला संकाय के नेतृत्व में समूह गायन में छात्र-छात्राओं के 5 समूह, **समूह नृत्य** में छात्र-छात्राओं के 4 समूह एवं **भाषण प्रतियोगिता** में 8 छात्र-छात्राओं ने पूर्ण मनोयोग एवं उल्लास के साथ अपनी प्रतिभागिता दी। महाविद्यालय के निर्णायक मण्डल द्वारा प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों की सूची तैयार की गयी।

रजत जयंती समारोह (दि.-09-11-2025)

दिनांक 09 नवम्बर 2025 की प्रात: 9:30 बजे महाविद्यालय के प्राचार्य व समस्त प्राध्यापक, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थी महाविद्यालय के सभागार में एकत्रित हुए। प्रात: 10 बजे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व0 श्री मदन मोहन उपाध्याय जी (द्वाराहाट महाविद्यालय का नाम जिनके नाम से जाना जाता है।) के सुपुत्र श्री हिमांशु उपाध्याय जी एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सी.पी. जोशी जी व श्री चन्द्र प्रकाश उपाध्याय, राज्य आन्दोलनकारी जी के आगमन एवं स्वागत के साथ हर्षोल्लस से 'रजत जयन्ती समारोह' का शुभारम्भ हुआ।

सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त द्वारा अपने उद्बोधन में सभी को राज्य स्थापना दिवस की बधाई देते हुए माँ सरस्वती के आह्वान हेतु अतिथि गणों द्वारा

दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की गयी।

तत्पश्चात सांस्कृतिक परिषद के नेतृत्व में कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय में दिनांक 3,6 व 7 नवम्बर को आयोजित की गयी प्रतियोगिताओं के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी। इस क्रम में हर्ष कुमार एवं राहुल जोशी द्वारा एकल गायन, कु. डॉली नेगी, कु. तनुजा आगरी व प्रियंका आर्या द्वारा एकल नृत्य प्रस्तुत किया गया। प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थियों द्वारा समूह गान (उत्तराखण्ड मेरी मातृत भूमि....) प्रस्तुत किया गया। समूह नृत्य में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त कु. रश्मि व लोकेश जोशी अपने विचारों से अतिथियों को प्रभावित किया। पोस्टर प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों द्वारा अपने पोस्टरों की प्रदर्शिनी लगायी गयी।

इसी क्रम में उत्तराखण्ड राज्य के इतिहास, संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान के विषय में महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. पूनम पन्त एवं श्री विपिन चन्द्र सुयाल ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अगले चरण में अतिथि गणों, प्राचार्य एवं मुख्य शास्ता प्रो. नाजिश खान द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता छात्र-छात्राओं को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में मुख्य एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा अपने उद्‌बोधन में छात्र-छात्राओं के प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी। प्राचार्य महोदय द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट, प्रो. नाजिश खान के आभार ज्ञापन एवं राष्ट्र गान के साथ इस रजत जयन्ती के रंगारंग कार्यक्रम का समापन किया गया।

समस्त महाविद्यालय परिवार द्वारा इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण मनोयोग से कार्य किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापिका डॉ. सुमन गढ़िया एवं विद्यार्थी लोकेश जोशी व कु. रिया द्वारा किया गया।

❖❖❖

अल्मोड़ा झण्डा सत्याग्रह

डॉ. अंजुम अली

असि. प्रो. इतिहास विभाग

जिस प्रकार ब्रिटिश शासन ने सम्पूर्ण भारत को धीरे-धीरे अपने अधीन कर लिया था। उसी प्रकार 278 अप्रैल 1815 ई. को उत्तराखण्ड में भी औपनिवेशिक शासन स्थापित हुआ। सम्पूर्ण देश के समान उत्तराखण्ड में भी सामाजिक ठहराव था तथा राजनैतिक चेतना का ह्रास हो रहा था। आर्थिक विषमता तथा सामाजिक कुरीतियों ने अपना स्थान बना लिया था। अंग्रेजी शासन ने अपनी शोषणकारी नीतियों को जारी रखा। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया भी इसी दौर में प्रारम्भ हुई। एक ओर प्रेस, पत्रकारिता का प्रारम्भ हुआ और दूसरी ओर राष्ट्रीय आन्दोलन की देशव्यापी तथा स्थानीय धाराओं का समन्वय हुआ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत सम्पूर्ण भारत में नमक कानून का विरोध किया गया। 6 अप्रैल 1930 को समुद्र तट पहुँचकर महात्मा गाँधी तथा उनके साथियों ने नमक कानून भंग किया। देश की अनेक नगरपालिकाओं में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। इस श्रृंखला में कुमाऊँ में भी जगह-जगह पर 'झण्डा सत्याग्रह' हुआ था। अल्मोड़ा में नमक सत्याग्रह 'झण्डा

सत्याग्रह' का रूप ले चुका था। 5 मई 1930 को महात्मा गाँधी तथा 25 मई, 1930 को गोविन्द बल्लभ पन्त की गिरफ्तारी के बाद अल्मोड़ा में भी तिरंगा फहराने का निश्चय हुआ। 25 मई 1930 को अल्मोड़ा नगर के स्वयं सेवकों की एक सभा हुई जिसमें अल्मोड़ा के नगरपालिका भवन पर झण्डा फहराने का प्रस्ताव पारित हुआ। इस प्रस्ताव पर ब्रिटिश शासकों की तीव्र प्रतिक्रिया हुई तथा अंग्रेज क्लर्कों ने इस प्रस्ताव को रोकना चाहा, सरकार की इस घोषणा के विरूद्ध अल्मोड़ा के प्रमुख नेता विक्टर मोहन जोशी तथा शान्तिलाल त्रिवेदी ने सत्याग्रह की योजना बनाई। 26 मई, 1930 को अल्मोड़ा नगर में एक विशाल जुलूस निकाला गया और नन्दा देवी प्रांगण में शान्तिलाल त्रिवेदी की अध्यक्षता में सभा हुई। 26 मई को ही राष्ट्रीय ध्वज हाथों में लेकर लगभग 150 सत्याग्रही, मोहन जोशी तथा शान्तिलाल त्रिवेदी के नेतृत्व में नगरपालिका भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने पहुंचे। सरकारी अधिकारी वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। स्वयं सेवकों के जुलूस को राष्ट्रीय झण्डे सहित नगरपालिका के भवन की ओर आते हुए देखकर सरकारी अधिकारियों ने वहाँ पर धारा 144 लागू कर दी, स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए स्वयंसेवकों के सेनापति मोहन जोशी ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि केवल वही लोग यहाँ रुके जिनकी मानसिक व पारिवारिक स्थिति बलिदान के योग्य है। अन्त में सभी सत्याग्रही वहाँ से चले गए। केवल विक्टर मोहन जोशी एवं शान्तिलाल त्रिवेदी के साथ पाँच सत्याग्रही– गंगा सिंह बिष्ट, पद्मादत्त तिवाड़ी, लाला हरिराम, रवीन्द्र प्रसाद अग्रवाल तथा भुवन चन्द्र वहाँ पर रहे। आगे दो नेता तथा उनके पीछे पाँच सेवक नगरपालिका भवन पर झण्डा फहराने के लिए आगे बढ़ने लगे। तभी गोरखा सैनिकों ने स्वयं सेवकों से राष्ट्रीय झण्डा छीनने का असफल प्रयास किया। अपनी असफलता पर गुस्साए गोरखा सैनिकों की मशीनगनें तो नहीं चलीं, परन्तु उन्होंने स्वयंसेवकों पर डण्डों की वर्षा कर दी तथा झण्डे की खींचातानी शुरू हो गई। डण्डों का लक्ष्य मोहन जोशी तथा शान्तिलाल त्रिवेदी थे। इसके बाद मोहन जोशी की रीढ़ की हड्डी पर खुकरी की कातिलाना चोट लगी और वे गिर पड़े। मोहन जोशी के सिर पर चोट लगने के कारण वे जीवनपर्यन्त मानसिक रुप से परेशान रहे। शान्ति लाल त्रिवेदी पर भी कातिलाना प्रहार किया गया। उनकी पसली तोड़ दी गई। परन्तु वह देश भक्त चट्टान के समान खड़ा रहा। उनके पाँव की हड्डी भी तोड़ दी गयी। अन्य स्वयंसेवकों पर भी लाठी का प्रहार हुआ। घायल अवस्था में मोहन जोशी तथा शान्तिलाल त्रिवेदी को गोरखा सैनिकों के कन्धों पर अस्पताल पहुँचा दिया गया।

इस आन्दोलन ने ब्रिटिश सरकार की नींव हिला दी। सारे जिले से प्रधानों के इस्तीफे आने लगे। 22 दिन तक अस्पताल में रहने के बाद भी इन दोनों नेताओं ने अस्पताल से ही नगरपालिका के अध्यक्ष को चेतावनी दी। ''यदि 27 जून तक नगरपालिका भवन पर राष्ट्रीय झण्डा नहीं फहराया गया, तो हम दोनों घायल होते हुए भी डाण्डी में जाकर सत्याग्रह करके झण्डा फहरा देंगे''।

अल्मोड़ा सत्याग्रह का कुमाऊँ कमिश्नरी पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जनता ने सरकार की इस दमन नीति के विरोध में स्थान-स्थान पर सभाएं आयोजित की। सत्याग्रहियों की चेतावनी की तिथि से दो दिन पूर्व ही नगरपालिका अध्यक्ष रेवरैंड ओकले ने भवन पर झण्डा फहरा दिया। अल्मोड़ा झण्डा सत्याग्रह के द्वारा भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में एक सुनहरा पृष्ठ और जुड़ गया।

❖❖❖

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में सफलता का मूल रहस्य यह है; जिस उद्देश्य को तुमने अपने समक्ष रखा है, उसे साहस एवं धैर्य के साथ प्रारम्भ करो और तब तक मत छोड़ो, जब तक वह कार्य पूर्ण न हो जाय।

गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध

● **सीमा**
बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

रुपरेखा- प्रस्तावना, जन्म और बाल्यकाल, गुरु तेग बहादुर जी का गुरु पद ग्रहण गुरु तेग बहादुर जी की यात्राएं और शिक्षण कार्य, शिक्षाएं गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान-शहादत की कथा, शहीदी दिवस का महत्व और आयोजन, गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाओं की आधुनिक प्रासंगिकता, गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु तेग बहादुर जी का योगदान, व्यक्तिगत विशेषताएं, गुरु तेग बहादुर जी के उपदेशों का जीवन संदेश निष्कर्ष।

प्रस्तावना- भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने न केवल अपने धर्म की रक्षा की, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोविंद सिंह जी तक, सिख गुरुओं की परंपरा में त्याग, सेवा, न्याय और सत्य के आदर्श स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस परंपरा के नवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी, ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि धर्म का सच्चा अर्थ केवल पूजा या कर्मकांड नहीं, बल्कि मानवता, स्वतंत्रता और दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना है। उनकी शहादत ने यह दर्शाया कि सत्य और धर्म की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देना भी महान कर्म है। इसीलिए उन्हें ''हिंद की चादर'' कहा जाता है।- अर्थात् भारत भूमि की रक्षा ढाल, गुरु तेग बहादुर जी के जीवन में आध्यात्म, साहस, सेवा, करुणा और बलिदान का संगम देखने को मिलता है। उनके उपदेश आज भी विश्व मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

जन्म और बाल्यकाल- गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 1 अप्रैल 1621 को अमृतसर में हुआ। उनके पिता गुरु हरगोबिंद सिंह जी, सिखों के छठे गुरु थे। और माता का नाम माता नानकी जी था। गुरु हरगोबिंद जी स्वयं एक संत योद्धा थे। उन्होंने सिख धर्म में ''मिरी पीरी'' की परंपरा स्थापित की, अर्थात् आध्यात्मिकता और युद्ध कला का संतुलन इस माहौल में गुरु तेग बहादुर जी का पालन पोषण हुआ। बाल्यकाल में उनका नाम ''**त्यागमल**'' था। परन्तु उनके साहस और पराक्रम के कारण गुरु हरगोबिन्द जी ने उन्हें ''तेग बहादुर'' (अर्थात् तलवार का वीर) नाम दिया। बचपन से ही वे अत्यंत गंभीर, शांत और चिंतनशील स्वभाव के थे। उन्होंने अपने पिता और गुरुजनों से धर्म, दर्शन, संगीत, युद्ध कला और लोक-सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाल्यकाल से ही वे आत्म-संयम, ध्यान और साधना में लीन रहते थे। इसी कारण वे न केवल वीर योद्धा, बल्कि गहन विचारक और आध्यात्मदर्शी बने।

गुरु तेग बहादुर जी का गुरु पद ग्रहण- गुरु हरगोबिंद जी के पश्चात सातवें गुरु हर राय जी की अल्पआयु में ही देहावसान के बाद 1665 में गुरु तेग बहादुर जी को सिक्खों का नवाँ गुरु घोषित किया गया। गुरु-पद ग्रहण के समय सिख धर्म कठिन दौर से गुजर रहा था। औरंगजेब का शासन था। जो धार्मिक सहिष्णुता के विपरीत कठोर नीतियां अपना रहा था। हिंदुओं और अन्य गैर मुस्लिम समुदायों पर अत्याचार, मंदिरों का विध्वंश और जबरन धर्मान्तरण की घटनाएँ आम थी। ऐसे कठिन समय में गुरु तेग बहादुर जी ने सिख समाज को धैर्य, संयम और साहस से जोड़ा। उन्होंने अपने अनुयायियों को बताया कि ''धर्म वह नहीं जो दूसरों को नीचा दिखाए, बल्कि वह जो हर मनुष्य के भीतर की आत्मा को जगाए''।

गुरु तेग बहादुर जी की यात्राएं और शिक्षण कार्य- गुरु जी ने गुरु पद संभालने के बाद भारत के विभिन्न भागों की यात्राएँ की। पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम और उड़ीसा तक। इन यात्राओं का उद्देश्य था लोगों में धर्म बोध, सहिष्णुता और सेवा भाव जागृत करना। उन्होंने समाज के हर वर्ग के लोगों से संवाद किया। चाहे वे हिन्दू हों, मुसलमान हों या अन्य समुदायों से। उन्होंने सिख धर्म के सिद्धांतों को लोक जीवन से जोड़ा जहां भी गए, वहां गुरुद्वारों की स्थापना की, लंगर सेवा प्रारंभ की और समानता का संदेश दिया।

गुरु तेग बहादुर जी के प्रवचनों और भजनों में आध्यात्मिक चिंतन के साथ-साथ जीवन व्यवहार की सादगी और सेवा भाव झलकता है उन्होंने कहा था -

''जो पर दुःख में दुःख नहीं मानै, सुख सने अहंकार।

अर्थात्- सच्चा साधक वही है जो सुख दुख, लाभ हानि, मान-अपमान से परे होकर ईश्वर में स्थित रहता है।

गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएं- उनकी शिक्षाएं केवल धार्मिक नहीं। बल्कि मानवीय और सार्वभौमिक हैं। उनके उपदेशों का सार निम्न बिन्दुओं में देखा जा सकता है।

1- **सत्य और साहस का पालन** - उन्होंने कहा है- सत्य के लिए संघर्ष ही जीवन का धर्म है। सच कहौ सुन लेहु सबै, जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पायो।

2- **धार्मिक सहिष्णुता** - गुरु जी ने सिखाया कि हर मनुष्य को अपने धर्म का पालन करने का अधिकार है। उन्होंने दूसरों के धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। जो मानवता की सर्वोच्च मिसाल है।

3- **सेवा और दया** - उनके अनुसार,धर्म सच्ची परीक्षा सेवा भाव में है। वे कहा करते थे, ''जिस मनुष्य में करूणा है, वही सच्चा भक्त है।

4- **त्याग और संतोष** - गुरु तेग बहादुर जी ने भौतिक जीवन के मोह से दूर रहकर संतोष का संदेश दिया उन्होंने लिखा- संतोषी सदा सुखी, लोभ ना आवै नेह।

5- **एकता और भाईचारा** - वे मानते थे कि जाति, धर्म या भाषा के आधार पर कोई मनुष्य श्रेष्ठ नहीं। सभी एक ही परमात्मा की संतान हैं।

गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान - शहादत की कथा- गुरु जी की शहदत भारतीय इतिहास में एक अमर अध्यात्म है। 17वीं सदी में जब मुगल सम्राट औरंगजेब ने इस्लाम धर्म के प्रचार हेतु जबरन धर्मांतरण आरंभ किया तब कश्मीरी पंडितों पर विशेष रुप से अत्याचार होने लगे। वे विवश होकर गुरु तेग बहादुर जी के पास आनन्दपुर साहिब पहुंचे और अपनी व्यथा सुनाई। गुरुजी ने उनसे कहा- ''जाओ, बादशाह से कहो कि यदि वह गुरु तेग बहादुर को इस्लाम में परिवर्तित कर ले, तो हम सब धर्मातरण कर लेंगे''। यह सुनकर औरंगजेब ने गुरु जी को दिल्ली बुलवाया। गुरु जी को उनके तीन प्रमुख साथियों - भाई मतीदास, भाई सतीदास और भाई दयालदास सहित गिरफ्तार कर दिल्ली लाया गया। उन्हें कड़ी यातनाएँ दी गई। उनके शिष्यों को एक-एक कर अत्याचारपूर्वक मारा गया, पर किसी ने धर्म नहीं छोड़ा अंततः 24 नवम्बर 1675 को दिल्ली के चांदनी चौक में गुरु तेग बहादुर जी का सिर काट दिया गया। उनके शरीर को किसी ने छूने का साहस नहीं किया। तभी उनके भक्त लछमण दास (बाद में भाई लाखी शाह वणजारा) ने रात में में उनके शरीर को चुराकर अपने घर में छिपाया और उसे जला दिया ताकि मुगल सेना को पता न चले। उनका सिर भाई जटा जी (भाई जीता) आनन्दपुर ले गए। जहां गुरु गोविंद सिंह जी ने उनका संस्कार किया। इस प्रकार गुरु तेग बहादुर जी ने न केवल सिख धर्म बल्कि हिंदु धर्म और संपूर्ण मानवता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया।

''हिन्द की चादर'' का प्रतीक - गुरु तेग बहादुर जी को ''हिंद का चादर'' कहा गया, क्योंकि उन्होंने इस देश की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की। जब संपूर्ण भारत में भय और अन्याय व्याप्त था। तब उन्होंने अपने प्राण देकर यह संदेश दिया कि धर्म किसी राजा की मर्जी से नहीं बल्कि आत्मा

की स्वतंत्रता से चलता है। उनकी शहदत के बाद यह भावना और भी प्रबल हुई कि किसी भी प्रकार का अत्याचार अस्वीकार्य है।

गुरु गोविंद जी ने अपने पिता की शहादत से प्रेरणा लेकर खालसा पंथ की स्थापना की जो साहस और न्याय का प्रतीक बना।

शहीदी दिवस का महत्व और आयोजन- गुरु तेग बहादुर जी का शहीदी दिवस हर वर्ष 24 नवम्बर को श्रद्धा और सम्मान से मनाया जाता है। इस दिन भारत सहित विश्व भर के गुरुद्वारों में कीर्तन, अरदास, लंगर सेवा और कथा प्रवचन होते हैं। इस दिन लोगों को याद दिलाया जाता है कि-

- धर्म की रक्षा केवल अपने धर्म तक सीमित नहीं है।
- मानवता सर्वोपरि है।
- अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस ही सच्चा धर्म है।

दिल्ली का गुरुद्वारा श्री शीश गंज साहिब और गुरुद्वारा शाखागंज साहिब इस शहादत की स्मृति में बने हुए हैं। लाखों श्रद्धालु वहां पहुंचकर गुरु जी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं।

● गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाओं की आधुनिक प्रासांगिता-

गुरु जी की शिक्षाएं केवल 17वीं सदी तक सीमित नहीं, बल्कि आज के युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

आज जब दुनिया में असहिष्णुता, हिंसा, जातीय भेदभाव और धार्मिक कट्टरता बढ़ रही है तब गुरु तेग बहादुर जी का संदेश प्रकाश स्तंभ की तरह है।

1- **धर्म स्वतंत्रता का अधिकार** - आज लोकतन्त्र का मूल आधार यही है कि हर व्यक्ति अपनी आस्था में स्वतंत्र है। गुरु जी ने यह अधिकार अपने प्राणों से सुरक्षित किया।

2- **मानवाधिकारों की रक्षा** - गुरु जी को ''पहले मानवाधिकार शहीद'' के रुप में भी जाना जाता है उन्होंने दिखाया कि इंसान की गरिमा किसी भी सत्ता से बड़ी होती है।

3- **समानता और भाईचारा**- जात-पात और धर्म-भेद से ऊपर उठकर गुरु जी ने मानवता की एकता का संदेश दिया- ''एक नूर ते सब जग उपज्या।

4- **त्याग और आत्म संयम** - आज के उपभोक्तावादी समाज में उनकी जीवन शैली, सादगी और संतोष की शिक्षा देता है।

5- **सेवा भाव और सहानुभूति** - सामाजिक सेवा को उन्होंने धर्म का सर्वोच्च रुप बताया आज समाज में स्वार्थ और भेदभाव बढ़ रहा है जिसमें उनकी शिक्षा मार्गदर्शक है।

गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु तेग बहादुर जी का योगदान- गुरु तेग बहादुर जी के लगभग 115 श्लोक गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं। इनमें जीवन के गूढ़ दर्शन, भक्ति भाव और त्याग संदेश झलकते हैं।

उनके शब्दों में-

''सब ते ऊंचा नामु है, जिस कउ मिले सो जानि।''

''जो नर दुःख में दुःख न मानै, सुख सने अहंकार नाहिं।

उनकी वाणी व्यक्ति को सांसारिक मोह माया से मुक्त होकर सत्य पथ पर चलने की प्रेरणा देती है।

गुरु तेग बहादुर जी के व्यक्तिगत व्यक्तित्व की विशेषताएं-

1- **आध्यात्मिक गहराई**- उनके विचार गूढ़ दर्शन से भरे थे, जो जीवन को सरल बनाते हैं।

2- **अपराजेय साहस**- उन्होंने सबसे बड़े अत्याचारी शासक के आगे भी सिर नहीं झुकाया।

3- **मानवता की रक्षा**- उन्होंने दूसरों के धर्म की रक्षा कर मानवता को नया आयाम दिया।

4- **शांत स्वभाव**- युद्ध में वीर, पर मन में अत्यंत शांत और करुणामय।

5- आदर्श पिता- गुरु गोविंद सिंह जैसे महान संत योद्धा के प्रेरणा स्रोत बने।

गुरु तेग बहादुर जी के उपदेशों का जीवन संदेश-

गुरु तेग बहादुर जी का जीवन हमें सिखाता है कि धर्म का सार केवल पूजा में नहीं, बल्कि दूसरों के अधिकारों की रक्षा में है। उन्होंने जो मार्ग दिखाया, वह ''सत्य के लिए मरना, पर झूठ के आगे झुकना नहीं'' का मार्ग है। उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि-

अपने सिद्धांतों से समझौता न करें।
भय के आगे झुकना नहीं चाहिए।
और मानवता की सेवा ही सच्चा धर्म है।

निष्कर्ष- गुरु तेग बहादुर जी का जीवन भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है उन्होंने यह साबित किया कि धर्म की रक्षा के लिए तलवार से नहीं, बल्कि त्याग और सत्य की लड़ाई से जीती जाती है।

उनकी शहादत केवल एक धार्मिक घटना नहीं, बल्कि मानवता की रक्षा का प्रतीक है। आज जब समाज में असहिष्णुता और हिंसा का बोलबाला है, गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएं हमें फिर से याद दिलाती हैं।

''मानवता सबसे बड़ा धर्म है।''

उनका जीवन उनकी वाणी और उनका बलिदान सदियों तक हमें प्रेरित करते रहेंगे उनके नाम की तरह ही उनका जीवन भी ''तेग बहादुर'' रहा - साहसी, निडर और सत्य के पथ पर अडिग।

वंदन है उस गुरु को जिसने अपने शीश से मानवता की लौ प्रज्ज्वलित की।

❖❖❖

वक्त

●डॉ. हेमचन्द्र दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी

वक्त की परिभाषा भी अजीब है
वक्त मिलता नहीं
वक्त निकलना मुश्किल होता है
वक्त पर काम आना होता है
वक्त देना होता है
वक्त पर मिली चीज
अक्सर महनीय होती है
वक्त को यूँ गुजारने से
वक्त ही धोखा दे डालता है
वक्त की मार खाकर
कुछ संभलते कुछ बिखर भी जाते हैं
वक्त बेवक्त कुछ याद आने लगते हैं
वक्त के साथ कुछ गुजर जाते हैं
हमारा वक्त बढ़िया चल रहा होता है
तो भी हम वक्त की
तारीफें करने लगते हैं
जब मुंह फेरने लगती है तकदीर
तब भी वक्त की दुहाई देते हैं
हर परीक्षा की घड़ी
वक्त के पैमाने पर फिट होती है
हमारे जीवन में वक्त
बड़ा बलवान परिभाषित है
हम वक्त पर लिखने बैठते हैं
तो वक्त गुजर जाता है
शेष रह जाता है बहुत कुछ
हमारे आने के वक्त की कुछ माप
हमारे जाने की अनिश्चितता के साथ/गुम जाती है।

❖❖❖

उत्तराखण्ड के 25 वर्ष : सपना, विकास और संकल्प की यात्रा

●रश्मि
एम.ए., तृतीय सेमेस्टर

उत्तराखण्ड भारत का एक ऐसा राज्य है, जो अपनी प्राकृतिक सुदंरता, धार्मिक महत्व, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यह हिमालय की गोद में बसा एक सुंदर राज्य है।

उत्तराखण्ड राज्य का गठन 9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश के 13 जिलों को मिलाकर किया गया। 9 नवम्बर 2000 को भारत के 27वें राज्य के रूप में उत्तरांचल का गठन किया गया। 1 जनवरी 2007 से उत्तरांचल के स्थान पर इसका नाम उत्तराखण्ड कर दिया गया। उत्तराखण्ड में कुल 13 जिले हैं जो कुमाऊँ मण्डल व गढ़वाल मण्डल में विभक्त हैं।

उत्तराखण्ड राज्य का गठन एक लम्बे राज्य निर्माण आन्दोलन के बाद हुआ। 1 सितम्बर 1994 का खटीमा कांड, 2 सितम्बर 1994 का मंसूरी कांड व 2 अक्टूबर 1994 के मुजफ्फर नगर कांड में अनेकों आंदोलनकारी शहीद हो गए। इन्हीं आंदोलनकारियों के अथक प्रयास के पश्चात् उत्तराखण्ड का गठन हुआ।

इन 25 वर्षों में उत्तराखण्ड में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, व पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

राज्य ने चारधाम यात्रा, आर्गेनिक खेती और हाइड्रोपावर परियोजनाओं से राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है।

इन 25 वर्षों में राज्य में प्रमुख विकास इस प्रकार हैं।

- **बुनियादी ढाँचा** - राज्य में बुनियादी ढाँचा के अंतर्गत विभिन्न सड़कों का निर्माण किया गया है। जिसमें दिल्ली-देहरादून एलिवेटेड रोड जैसी परियोजनाएँ प्रमुख हैं। रेल परियोजना में ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेलमार्ग बनाया गया है।
- **स्वास्थ्य सेवाएँ**- राज्य में प्रत्येक नागरिक को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न चिकित्सालयों की स्थापना की गई हैं। ऋषिकेश में एम्स स्थापित है।
- **आर्थिक विकास**- इसके अन्तर्गत नए उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए मेगा औद्योगिक नीति अपनाई गई है। राज्य में एकीकृत औद्योगिक संस्थानों की स्थापना की गई है। जिनका उद्देश्य राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना है।
- **ग्रामीण विकास**- गांवों में प्रत्येक नागरिक को बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा व रोजगार देने का प्रयास किया जा रहा है।
- **पर्यटन** - पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन नीति की घोषणा की गई है। इसके अंतर्गत होमस्टे को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है। चारधाम यात्रा की सुगमता के लिए हेलिकाप्टर सेवा भी संचालित है।
- **जल विद्युत ऊर्जा** - विद्युत ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए राज्य में अनेकों बाँधों का निर्माण किया गया है। जिसमें टिहरी जलविधुत परियोजना (2400 मेगावाट) राज्य की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना है। इसके अतिरिक्त उत्सायू बांध, रामगंगा नदी पर कालागढ़ बांध, धौलीगंगा बाँध व मनेरी भाली बांध प्रमुख हैं।

हमारे प्रदेश ने इन 25 वर्षों में विकास के अनेकों लक्ष्यों को प्राप्त किया है। किन्तु विकास की इस यात्रा में कई चुनौतियाँ पलायन, पर्यावरणीय असन्तुलन, बेरोजगारी व प्राकृतिक आपदाएँ सामने आई हैं।

उत्तराखण्ड हिमालय की गोद में बसा है। हिमालय नवीन वलित पर्वत होने के कारण आपदाओं के दृष्टिकोण से अत्यधिक संवेदनशील हैं। इसी कारण उत्तराखण्ड में विकास का स्वरूप प्राकृतिक पिर्यावरण को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए। यानि सतत विकास के आधार पर विकास

किया जाना चाहिए। जिसमें प्राकृतिक पर्यावरण व भावी पीढ़ी की संभावनाओं को दृष्टिगत रखा जाए। जिससे विकास के साथ प्राकृतिक आपदाओं पर भी नियन्त्रण हो सके।

संकल्प - प्रत्येक उत्तराखण्ड वासी का संकल्प पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, सांस्कृतिक संरक्षण व अखण्डता को बनाए रखना होना चाहिए। जिसके फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति रोजगार, प्रत्येक गांव का विकास और प्रत्येक नागरिक की उन्नति हो। इस प्रकार मेरे संकल्प और सपनों का उत्तराखण्ड ऐसा हो -

''जिसमें टूटे घरों के स्थान पर, सुसज्जित गाँव हो।
चारों ओर हरियाली व पेड़ों की छाँव हो,
नशा नहीं रोजगार हो
पलायन पर रोकथाम हो
जाति की जगह समानता हो,
महिलाओं का सम्मान हो,
शिक्षा का विकास हो,
प्रकृति का ध्यान हो,
उज्ज्वल भविष्य की आस हो
इस प्रकार एकता, भाईचारे व अखण्डता से परिपूर्ण उत्तराखण्ड महान हो। उत्तराखण्ड महान हो।''

❖❖❖

उत्तराखण्ड में स्टार्टअप संस्कृतिः युवाओं के लिए नए अवसर

●डॉ. अशोक कुमार
असि. प्रोफे. वाणिज्य विभाग

भूमिका

उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य होने के साथ-साथ प्राकृतिक संपदा, पर्यटन क्षमता, कृषि विविधता तथा सक्षम मानव संसाधन से परिपूर्ण है। यद्यपि लंबे समय तक राज्य को सीमित रोजगार अवसरों के कारण पलायन जैसी गंभीर समस्या का सामना करना पड़ा, परन्तु हाल के वर्षो में विकसित होती स्टार्टअप संस्कृति ने इस प्रकृति को सकारात्मक दिशा देने का कार्य किया है। स्टार्टअप के माध्यम से युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और उद्यमिता विकास के नए अवसर सामने आए हैं। इस दिशा में राज्य सरकार द्वारा लागू उत्तराखण्ड स्र्टाटअप नीति ने नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए आत्मनिर्भरता की भावना को सुदृढ़ किया है।

उत्तराखण्ड में स्टार्टअप का अर्थ- स्टार्टअप ऐसे नवाचार आधारित उद्योग होते हैं, जो नवीन विचारों, आधुनिक तकनीक तथा स्थानीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग के माध्यम से विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते हैं।

उत्तराखण्ड में स्टार्टअप की आवश्यकता-

उत्तराखण्ड में स्टार्टअप की आवश्यकता के अनेक कारण हैं जैसे-

- राज्य में औद्योगिक विकास का सीमित विस्तार
- पर्वतीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी
- बेहतर आजीविका की तलाश में युवाओं का पलायन
- स्थानीय उत्पादों एवं पारंपरिक व्यवसायों का बाजार से पर्याप्त जुड़ाव न होना

इन परिस्थितियों में स्टार्टअप युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार और स्वरोजगार उपलब्ध कराते हैं तथा इन सम्भावनाओं को अवसर में बदलने का प्रभावी साधन बनते हैं।

उत्तराखण्ड सरकार की स्टार्टअप पहल

उत्तराखण्ड में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने ''उत्तराखण्ड स्टार्टअप नीति'' लागू की है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य युवाओं को नए व्यवसाय शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता, मार्गदर्शन और अनुकूल वातावरण

उपलब्ध कराना है, ताकि वे अपने विचारों को सफल स्टार्टअप में बदल सकें।

स्टार्टअप के लिए प्रमुख प्रावधानों का विवरण:

(1) स्टार्टअप पंजीकरण और मान्यता

राज्य सरकार द्वारा स्टार्टअप को औपचारिक मान्यता दी जाती है, जिससे उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं, अनुदानों और सुविधाओं का लाभ आसानी से मिल सकें।

(2) इनक्यूबेशन सेंटर और मेंटरशिप

युवाओं को व्यवसाय शुरू करने के शुरूआती चरण में मार्गदर्शन देने के लिए इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित किए गए हैं। यहाँ विशेषज्ञों द्वारा बिजनेस प्लान, तकनीकी सहायता और प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रमुख इनक्यूबेशन सेंटर इस प्रकार है-

I. STPI (Software Park of India)- देहरादून

देहरादून में STPI के तहत स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित है, जहाँ IT/ITes से जुड़े स्टार्टअप को कार्यात्मक स्थान, नेटवर्क, तकनीकि सहायता और मेंटरिंग मिलती है। यहाँ PLUG-n-Play और स्पेस उपलब्ध है, और इसे आगे स्टार्टअप हब उत्तराखण्ड के रूप में विकसित किया जा रहा है।

II. ग्रामीण इनक्यूबेशन सेंटर

अल्मोड़ा (हवालबाग) और कोटद्वार (पौड़ी जिले) में रूरल बिजनेस इनक्यूबेटर खोले गए हैं, जहाँ ग्रामीण युवाओं और स्थानीय उद्यमियों को व्यवसायिक समर्थन, मेंटरिंग और प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

III. UPES Council for Innovation and Entrepreneurship- देहरादून

UPES यूनिविर्सिटी के तहत UCIE एक सक्रिय इनक्यूबेटर है, जो तकनीकी और अन्य क्षेत्रों के स्टार्टअप को मेंटरशिप, नेटवर्किंग, प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराता है। यह एमक शैक्षणिक आधारित इनक्यूबेशन सेंटर है।

सरकार द्वारा इन केन्द्रों को बढ़ाया जा रहा है ताकि युवाओं को व्यवसाय शुरू करने में सहायता, प्रशिक्षण और संसाधन मिलें।

(4) बीज पूँजी (Seed Fund) सहायता

नए स्टार्टअप को प्रारंभिक खार्चो के लिए सरकार द्वारा बीज पूँजी उपलब्ध कराई जाती है, जिससे वे बिना अधिक आर्थिक दबाव के अपना व्यवसाय शुरू कर सकें।

(5) महिला एवं SC/ST उद्यमियों को विशेष प्रोत्साहन-

समावेशी विकास को ध्यान में रखते हुए महिला उद्यमियों तथा अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के युवाओं को अतिरिक्त वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

(6) टैक्स और शुल्क में छूट-

मान्यता प्राप्त स्टार्टअप को विभिन्न करों, पंजीकरण शुल्क और लाइसेंस फीस में छूट दी जाती है, जिससे व्यवसाय संचालन की लागत कम होती है।

उत्तराखण्ड में स्टार्टअप के प्रमुख क्षेत्र

(क) पर्यटन एवं होम-स्टे आधारित स्टार्टअप

- इको-टूरिज्म
- होम-स्टे
- ट्रैकिंग और एडवेंचर टूरिज्म
- ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफॉर्म

इस प्रकार, पर्यटन एवं होम-स्टे आधारित स्टार्टअप पर्वतीय क्षेत्रों के युवाओं के लिए स्थानीय रोजगार, आत्मनिर्भरता और पलायन रोकने का प्रभावी साधन सिद्ध हो रहे हैं।

(ख) कृषि और एग्री-स्टार्टअप

- जैविक खेती
- औषधीय एवं सुगंधित पौधे
- मधुमक्खी पालन
- फूड प्रोसेसिंग और पैकेजिंग

इस प्रकार, कृषि और एग्री-स्टार्टअप किसानों को सीधे बाजार से जोड़कर उनकी आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

(ग) हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पाद आधारित स्टार्टअप

- रिंगाल शिल्प

- ऊनी वस्त्र
- लोकल फूड प्रोडक्ट (मंडुवा, झंगोरा)

इस प्रकार, हस्तशिप और स्थानीय उत्पाद आधारित स्टार्टअप ''लोकल फॉर वोकल'' की अवधारणा को मजबूत करते हुए आत्मनिर्भरता और रोजगार को बढ़ावा दे रहे हैं।

(घ) एजुकेशन एवं डिजिटल आधारित स्टार्टअप

शिक्षा और डिजिटल तकनीक से जुड़े स्टार्टअप उत्तराखण्ड में युवाओं के लिए नए अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। इंटरनेट और मोबाइल तकनीक के माध्यम से सीमित संसाधनों में भी बड़े स्तर पर सेवाएं प्रदान करना संभव हो गया है।

- ऑनलाइन कोचिंग के जरिए छात्रों को घर बैठे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा रही है।
- डिजीटल कंटेंट निमाण जैसे वीडियों लैक्चर, ई-नोट्स और ऑनलाइन अध्ययन सामग्री से ज्ञान का प्रसार किया जा रहा है।
- स्किल डेवलपमेंट प्लेटफॉर्म युवाओं को रोजगारोन्मुख कौशल सीखने का अवसर प्रदान कर रहे हैं।

युवाओं के लिए उत्तराखण्ड स्टार्टअप के लाभ

उत्तराखण्ड में स्टार्टअप पहल ने युवाओं को अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाया है और उनके लिए नए अवसर उत्पन्न किए हैं:

- स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होने से युवाओं को अपने ही क्षेत्र में काम करने का अवसर मिल रहा है।
- पलायन की समस्या में कमी आ रही है।
- स्टार्टअप के माध्यम से युवाओं में आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता और निर्णय लेने का आत्मविश्वास विकसित हो रहा है।
- नवाचार और व्यवहारिक कौशल के विकास से युवा आधुनिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बन रह हैं।
- इसके परिणामस्वरूप स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है।

चुनौतियाँ

हालाँकि उत्तराखण्ड में स्टार्टअप संस्कृति धीरे-धीरे मजबूत हो रही है, लेकिन इसके बावजूद कुछ व्यवहारिक चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई है:

- स्टार्टअप शुरू करने के लिए पर्याप्त पूँजी का अभाव। युवाओं में तकनीकी और व्यवसायिक ज्ञान की कमी।
- उत्पादों और सेवाओं के प्रचार-प्रसार में मार्केटिंग एवं नेटवर्किंग की कठिनाइयाँ।
- पहाड़ी और दूरस्थ क्षेत्रों में आधारभूत ढाँचे की सीमित उपलब्धता।

निकर्ष

इस प्रकार, उत्तराखण्ड में स्टार्टअप न केवल आर्थिक विकास का माध्यम बन रहे हैं, बल्कि युवा सशक्तिकरण और पलायन रोकने का प्रभावी उपाय भी है। यदि नीति, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता का सही समन्वय किया जाए, तो उत्तराखण्ड आने वाले वर्षो में पर्वतीय स्टार्टअप मॉडल का आदर्श राज्य बन सकता है।

स्रोत:-

- स्टार्टअप इण्डिया पोर्टल, भारत सरकार
- उत्तराखण्ड स्टार्टअप नीति
- नीति आयोग रिपोर्ट्स
- उत्तराखण्ड स्टार्टअप संबंधी समाचार
- UPSE/STPI देहरादून-इन्क्यूबेशन पहल

❖❖❖

क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है? तो समय को व्यर्थ मत गवाओ, क्योंकि जीवन उसी से बना है। **-फ्रैंकलिन**

स्वरचित कविता-

गुरू तेग बहादुर.....

●रिया
बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर

भारत का ये इतिहास,
जन्में जहाँ थे वीर खास।
इन वीरों का इतिहास पुराना,
होकर अर्पित देश पर मर मिट जाना।

दोहराऊँ जो सिख इतिहास,
गुरू तेग बहादुर आते याद।
हो गए न्यौछावर देश पर,
मिलाकर अस्मिता अपनी खाक।

महान कवि, ज्ञान के अद्भुत सागर,
त्याग वीरता के अनुपम रूप।
धार्मिक ज्ञानी संत ऐसे,
लगता जैसे कोई सुंदर दीप।
थे नवे गुरू सिखों के और,
फैलाया था मानवता का संदेश।
है ऋणी और कृतज्ञ जिनका,
आज जन मन व सारा देश।

लेकर समानता धर्म संदेश,
सिख धर्म चहुँ ओर फैलाया।
बनकर सच्चे मानव,
हर मानव को।
मानवता का पाठ पढ़ाया।
गुरू बनकर नवे,
सिख गुरू का पद अपनाया।

नेकी का मार्ग ऐसा,
चलना इस पर ना ऐसा वैसा।
कर दिया मुश्किलों ने शुरू,
अच्छाई पर तंजा कसनी।
मुगलों का बढ़ा अत्याचार,
किये इनपे हजारों वार।
चांदनी चौक का वो स्थान,
कटा शीश जहाँ,
हुआ कत्ल सरेआम।

कटे शीश पर नतमस्तक,
हुए आज हजारों शीश।
महान व्यक्तित्व आज जो,
हुए देश के लिए शहीद।

बढ़ा गौरव देश का,
हुआ ऊँचा मान सम्मान।
हो गये फिर देश पर,
एक महान वीर बलिदान।
ऐसे वीर हो हर पल,
ये मन देता है आदर मान।
हैं झुकाते हम इनके आगे शीश,
और करते इनको शत् शत् प्रणाम।

❖❖❖

आधुनिक जीवनशैली में योग और मानसिक स्वास्थ्य : एक अनिवार्य संतुलन

●प्रियंका जोशी
योग प्रशिक्षक

आज के दौर में जहाँ तकनीक और भागदौड़ भरी जिंदगी ने हमारे भौतिक सुख-सुविधाओं में इजाफा किया है, वहीं मानसिक तनाव, चिंता (Anxiety) और अवसाद (Depression) जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया है। आज के समय को देखते हुए यह स्पष्ट हो गया है कि मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज करना अब संभव नहीं है। इस बिगड़ती हुई जीवन शैली (Life Style) को ठीक करने में योग मददगार साबित होता है। योग केवल एक शारीरिक कसरत नहीं है बल्कि आपके मानसिक और आध्यात्मिक स्तर में सुधार करने में उपयोगी एक विज्ञान है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग :-

योगाभ्यास कई तरह से हमारे मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। जैसे-

- नियमित योगाभ्यास से शरीर में कॉर्टिसोल (Cortisol) जैसे तनाव पैदा करने वाले हार्मोन का स्तर कम होता है।
- योगा और ध्यान के माध्यम से मस्तिष्क में सेरोटोनिन और डोपामाइन जैसे रसायनों का प्रवाह बड़ता है, जो मूड को बेहत्तर बनाने और खुशी का अनुभव कराने में सहायक होते हैं।
- योग पैरासिम्पेथेटिक नर्वस सिस्टम को सक्रिय करता है, जो शरीर को रिलैक्स मोड में लाता है। और हृदय गति को सामान्य रखता है।

वैसे तो सभी प्रकार के आसन, प्राणायाम आदि योगाभ्यास किसी न किसी तरह शारीरिक और मानसिक अवस्था पर प्रभाव डालते हैं। परन्तु कुछ विशिष्ट आसन जो सीधे तौर पर मानसिक शांति से जुड़े हैं। जैसे- बालासन (Child's Pose)- मस्तिष्क को शांत करता है और थकान व चिंता को कम करता है।

सेतु बंधासन (Bridge Pose) - भावनात्मक संतुलन (Ewotional Balance) लाता है और डिप्रेशन की प्रवृत्ति को घटाता है। ऐसे ही कुछ प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम, प्राणायाम मस्तिष्क के दोनों हिस्सों को संतुलित कर तुरंत शांति प्रदान करता है।

वहीं भ्रामरी प्राणायाम से उत्पन्न होने वाली भौंरे जैसी गूँज (Vibration) मस्तिष्क की नसों को शांत करती है और तनाव पैदा करने वाले विचारों को रोककर मन कर्मो तुरंत गहरी शांति और सुकून की स्थिति में लाती है। वहीं शवासन (Corpose Pose) जो गहरी विश्रांति के लिए प्रभावी आसन जो अनिद्रा (Insomnia) में राहत देता है।

आज का युवा वर्ग स्क्रीन और सोशल मीडिया के कारण निरंतर मानसिक थकान का अनुभव कर रहा है योग एक डिजिटल डिटॉक्स की तरह कार्य करता है और वर्तमान क्षण में जीना (Mindfulness) सिखाता है। कॉरियर और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच योग एक एंकर की तरह काम करता है जो कार्य जीवन संतुलन (Work-Life balance) बनाता है और आंतरिक शक्ति और उत्साह को बनाए रखता है। छात्रों और वर्किंग लोगों के लिए योग एकाग्रता बढ़ाने और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करने का एक सशक्त माध्यम है।

योग एक प्राचीन विरासत है जो आधुनिक दुनिया की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। यह केवल शरीर को लचीला बनाने के बारे में नहीं है, बल्कि यह स्वयं को और अधिक समझने का मार्ग है। यदि हम प्रतिदिन 20 से 30 मिनट योग को दें, तो हम न कवेल शारीरिक रुप से फिट रहेंगे बल्कि मानसिक रुप से भी ऊर्जावान और सकारात्मक बने रहेंगे।

अंत में यह समझना जरुरी है कि योग एक लाइफस्टाइल चॉइस (Life Style Choice) है, जो आपको केवल जीना नहीं बल्कि बेहतर जीना सिखाती है।

❖❖❖

Sacred groves and sacred lakes in Uttarakahand

Sharmishtha Mehra
Asstt. Prof. Zoology Deptt.

A traditional strategy for the protection of biodiversity has been in practice in India and some other Asian countries in the form of sacred groves. Sacred groves are forested areas conserved by local communities due to their spiritual and cultural beliefs. In Uttarakhand, these groves are linked to deities, saints, or historical figures, with conservation rooted in religious traditions. These groves represent islands of pristine forests (most undisturbed forest without any human impact). Sacred groves in Uttarakhand are unique because they aren't usual forests but alpine meadows. They are the *secret wizards of conservation*, where cutting trees, hunting, or grazing is restricted or forbidden because the grove is believed to be the **abode of deities or spirits.**

Many groves are linked with **local deities** like *Nag Devta* (serpent deity), *Bhairav Devta*, or *Van Devta* (forest god). Rituals, folk songs, and ceremonies often take place here, reflecting the **deep spiritual reverence** held by the local people. Major Sacred Groves in Uttarakhand include:

- **Binsar Wildlife Sacred Grove** (dedicated to Binsar Devta)
- **Nag Tibba forests (** Named after Nag Devta,)
- **Forest around Jageshwar Dham**
- **Dodital -**The sacred grove near Dodital Lake (is revered as the birthplace of Lord Ganesha)

Similarly, several water bodies have been declared sacred because they hold **special religious or spiritual significance** for a community due to its connection with deities, rituals, or myths, leading to protection of aquatic flora and fauna. In Uttarakhand, these lakes are respected as divine places, and people believe that visiting them brings **spiritual peace and purification.Major Sacred Lakes of Uttarakhand include:**

- **Satopanth Tal** – Located near Badrinath, it is believed to be the meditation place of **Brahma, Vishnu, and Mahesh**. The lake is triangular in shape and has clear green water.
- **Hemkund Sahib (Hemkund Tal)** – A high-altitude glacial lake sacred to **Sikhs**, situated beside the famous Gurudwara Hemkund Sahib.
- **Naini Lake (Nainital)**– Considered a **Shakti Peetha**, where Goddess Sati's eye is believed to have fallen. The **Naina Devi Temple** is located on its bank.
- **Roopkund Lake** – Also called the **Skeleton Lake**, it is known for the human skeletons found in and around it, giving it a mysterious character.
- **Deoria Tal** – Famous for its clear reflections of the **Chaukhamba peaks**, and a popular trekking and pilgrimage site.
- **Kedartal** – A pristine glacial lake near **Kedarnath**, known for its crystal-clear water and religious importance.
- **Bedni Kund** – An important halt during the **Nanda Devi Raj Jat Yatra**, surrounded by snow-covered peaks like Trishul.
- **Parvati Sarovar** – Located near **Adi Kailash**, associated with Lord Shiva and Goddess Parvati.

Other important Sacred Lakes are Sattal, Naukuchiatal, Vasuki Tal & **Bhimtal**

Ecological and cultural significance of sacred groves and sacred lakes

- **Sacred grove** act as **biodiversity hotspots**, supporting rare and endemic flora and fauna
- Help in **water conservation** and **soil protection**.
- Contribute to **climate regulation** at the local level.
- Serve as a **symbol of nature worship** and help preserve traditional cultural values.
- Are used for **jagar ceremonies** and other religious rites strengthening **community identity and cohesion.**
- **Sacred lakes** are embedded in **local folklore, rituals, and festivals,** preserving centuries old belief systems and cultural values that strengthen community identity.

- Sacred lakes help conserve freshwater resources, support biodiversity, and maintain the natural environment, as their sacred status encourages protection and respect for the surrounding ecosystem

Sacred groves show that traditional beliefs can work together with modern conservation methods. They provide a model for sustainable development by protecting forests through community traditions. They help safeguard cultural heritage, maintain biodiversity, and offer calm places for learning and spiritual peace. Also sacred lakes of Uttarakhand are an important part of the state's spiritual and natural heritage. They combine religious beliefs with environmental conservation and attract pilgrims, tourists, and nature lovers from all over the world.

WHY STUDY PHYSICS?

Dr. B.P. Bahuguna
Asstt. Prof. Physics Deptt.

"Physics is ubiquitous in all aspects of our lives. Its principle underlies our understanding of all natural phenomena, and most of the technologies that surround us. These include household- appliances, sports and entertainment, medical diagnosis, transport, computer, communication and manufacturing, advanced tools for scientific research and most of the defence-technologies. Physics is the most basic of all sciences and its importance in our everyday life should be emphasized".

The earlier explanations of physical phenomena were ascribed to mythical gods who played key-roles in creating and preserving the world. These myths, elaborated upon and added to by men who told and retold them from generation to generation, reflected man's continuing need for support. His sentimental responses to his environment largely shaped these myths. The world, as early man knew it, was vastly different from the world we know today, even though the rivers, the oceans, the mountains, the sun and the moon, the planets and stars are all essentially the same. The change has come in man himself. As he changes, he must describe his world differently. To a person born into an age of rapidly evolving technology, physics tends to be associated with the useful devices like, TVs, refrigerators, airplanes, ships, rails, rockets, missiles, bombs, Computers, electronic equipment's use in medical centers, machines, in factories. etc. But in a more complete sense, physics is an intellectual activity rather than being a purely technological one. Without technology, most of our durable goods, public utilities, consumables and services would simply not exist and physics is one of the most important sciences that are responsible for these developments.

- **Impact of Physics on Mankind**

The present age is different from all the previous eras only because of the scientific inventions, which are in daily use of mankind. The life of today's human being is completely dependent upon the machinery and industry. The industrial revolution is based on technology, which is the application of physics and other branches of science. The speed of development achieved the greatest impetus by the end of 19th century and in 20th century man became able to see into the world of atom and mysteries of galaxies. Man reached moon and explored the deserts of empty space and expanding galaxies

❖ **Physics in Everyday Life**

The most basic of the sciences, physics, is all around us. If you have ever wondered what makes lightening, why a boomerang returns, how ice-skaters can spin so fast, why waves crash on the beach, how does a tiny computer deal with complicated problems, or how long does it take the light to travel from a star to reach us? You have been thinking about some of the same things physicists study every day. Physicists like to ask questions. If you like to explore and figure out why things are the way they are, you might like physics. If you have had a back-row seat in a concert, and could still hear, you experienced physics at work! Physicists studying sound contribute to the design of concert halls and the amplification equipment. Lasers and radioactive elements are the tools used against the war on cancer and other diseases. The work of physicists made possible the computer chips that are in your digital watch, CD player, electronic games, and hand-held calculator. It is the physics that lets us watch shows, movies, matches, games and news at our houses through TV and Smartphone. There are so many examples where physics is in use in our daily lives that one cannot mention all in a note.

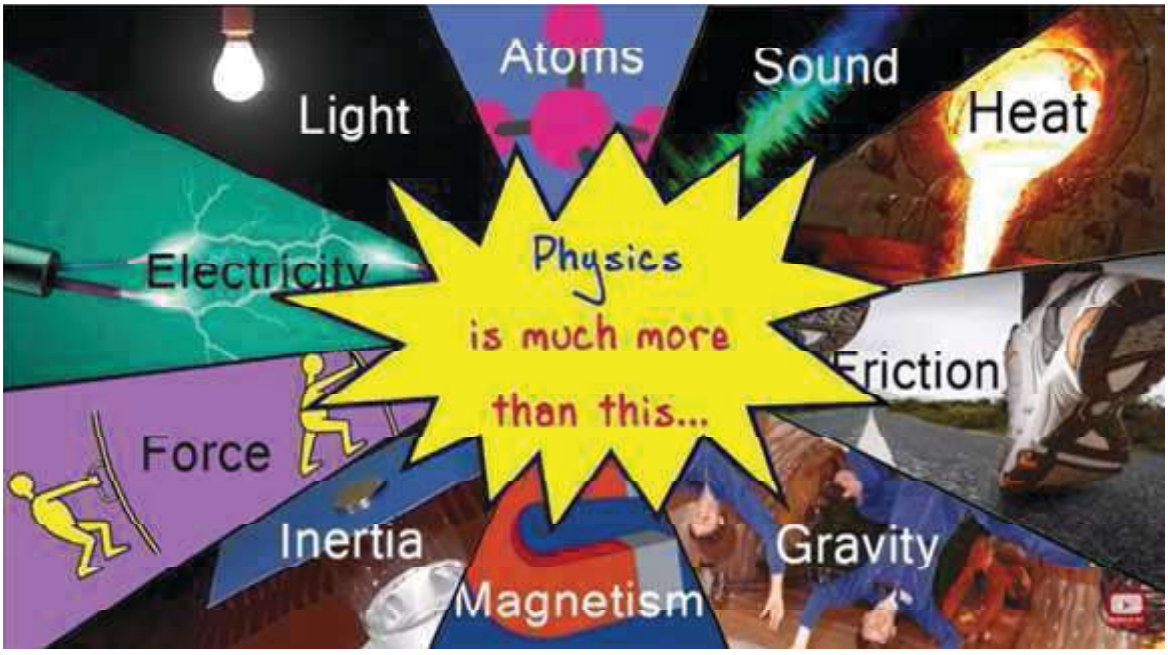

❖ These are some everyday life examples related to physics which we see, do and experience regularly

Moreover, when we start learning physics, we begin with motion. Velocity, acceleration, force, mass, energy, momentum……., these are some of the concepts that are found in an elementary physics course. The principles developed can apply to the motion of anything- planets, electrons, atoms, glaciers… Physics is really the study of everything in the universe.

यूथ रेडक्रास इकाई

रेडक्रॉस का नारा है - सेवा धर्म हमारा है।

यूथ रेडक्रॉस इकाई मानवता को समर्पित एक इकाई है जो रेडक्रॉस के 07 मूल सिद्धान्तों - मानवता, निष्पक्षता, तटस्थता, स्वतन्त्रता, स्वैच्छिक सेवा, एकता एवं सार्वभौमिकता पर आधारित है।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट (अल्मोड़ा) को दिनांक - 04-01-2025 को भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी में पंजीकृत किया गया तथा महाविद्यालय में यूथ रेडक्रास इकाई का गठन किया गया। सत्र (2024-25) में समय-समय पर महाविद्यालय में यूथ रेडक्रॉस इकाई द्वारा कार्यक्रम संचालित किये गए।

01) 22 मार्च, 2025 - विश्व जल दिवस के अवसर पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला एवं स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

02) 28 अप्रैल, 2025 - यूथ रेडक्रॉस की सामान्य जानकारी प्रदान करने तथा यूथ रेडक्रॉस में पंजीकृत छात्र-छात्राओं को यूथ रेडक्रॉस सामग्री प्रदान करने के उद्देश्य से एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया।

03) 08 मई 2025 - विश्व रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर यूथ रेडक्रॉस इकाई द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय- ''On the side of Humanity'' था।

04) 05 जून, 2025 - यूथ रेडक्रॉस इकाई द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर इस वर्ष की थीम - "Ending Plastic Pollution" पर यूथ रेडक्रॉस के छात्र-छात्राओं को जानकारी प्रदान की गयी। तथा पौधारोपण तथा स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया।

05) 21 जून, 2025 - विश्व योग दिवस का कार्यक्रम इस वर्ष की थीम - "Yoga for One Earth, One Health" पर आधारित था जिसमें समस्त महाविद्यालय द्वारा योगासन व योगाभ्यास किये गये साथ ही छात्र-छात्राओं को योग के महत्व व योग के क्षेत्र में करियर बनाने सम्बन्धी जानकारी प्रदान की गयी।

सत्र (2025-26) में यूथ रेडक्रास इकाई द्वारा दिनांक - 14 नवम्बर 2025 को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 38 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। यह शिविर स्व. बाल किशन देवकी जोशी चेरिटेबल ब्लड सेन्टर, मुखानी, हल्द्वानी की टीम के सहयोग से आयोजित किया गया। शिविर को सफल बनाने में यूथ रेडक्रॉस के समस्त छात्र-छात्राओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

कु. अंजली
नोडल अधिकारी

राष्ट्रीय कैडिट कोर (एन.सी.सी.)

महाविद्यालय में 77 यू.के.बी.एन. एन.सी.सी. अल्मोड़ा के द्वारा संचालित हो रही हैं, जिसमें 106 (एस.डी. / एस डब्ल्यू) कैडिट प्रतिभाग करके एन.सी.सी. प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष व तृतीय वर्ष में नामांकित होकर कैडिट अपनी सहभागिता कर एन.सी.सी. का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

राष्ट्रीय कैडिट कोर्स विश्व का सबसे बड़े दल के रुप में जाना जाता है, इस प्रशिक्षण प्राप्त युवा दल को प्रतिवर्ष 18 लाख कैडिट आर्मी, एयर तथा नेवी विंग में प्रतिभाग कर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। एन.सी.सी. का मुख्य ध्येय एकता व अनुशासन है इस लक्ष हेतु एम.सी.सी. कैडिट नागरिक व आन्तरिक भू रक्षा के लिए यथा अवसर सेवा के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने प्रशिक्षण का समुचित निर्वहन कर रहेँ। महाविद्यालय के सब यूनिट के द्वारा कैडिट 77 यू. के. कार्यालय के कमान अधिकारी कर्नल जितेन्द्र शर्मा के निर्देशन में 1 सम्पूर्ण कार्यक्रम व गतिविधिया, भर्ती प्रक्रिया व कार्यरिग प्रशिक्षण सम्पन्न हो रहा है।

इस पाठ्य सहगामी क्रिया क्लापों में मनोयोग पूर्वक, सहभागिता द्वारा शरीरिक - मानसिक विकास से नहीं अपितु

भविष्य कॅरियर निर्माण में भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

विगत वर्ष में महाविद्यालय के कैडिटों में कई कार्यक्रम व राष्ट्रीय क्रिया कलापों में प्रतिभाग किया है, तथा राष्ट्रीय स्तर के कैम्पों में प्रतिभाग कर रहे हैं। एन.सी.सी. प्रशिक्षण कार्यक्रमों में परेड, नागरिक व राष्ट्रीय सुरक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता, प्राथमिक चिकित्सा व आपदा प्रबंधन से सम्बन्धित कक्षायें संचालित हो रही हैं।

एन.सी.सी. ''वी'' प्रमाण पत्र तथा एन.सी.सी. ''सी'' प्रमाण पत्र के द्वारा सेना में भर्ती तथा विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा में अधिमान प्राप्त कर सकते हैं। महाविद्यालय के एन.सी.सी. कैडिटों ने निम्न राज्य व नेशनल कैम्पों में प्रतिभाग किया गया है जो निम्नलिखित हैं। महाविद्यालय में एन.सी.सी. कैडिटों ने CAIC कैम्प, एक भारत श्रेष्ठ भारत कैम्प एम.एच. अटैचमेन्ट कैंप, आर्मी अपाटमेन्ट कैम्प तथा प्री RDC चयन प्रक्रिया कैम्प उत्तराखण्ड टेक कैम्प में प्रतिभाग किया तथा NIC कैम्प मेघालय में प्रतिभाग किया तथा महाविद्यालय के कैडिटों के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों युवा आपदा मिशन प्रबन्धन, गणतंत्र दिवस, राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस विश्व पर्यावरण दिवस व अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, हरेला, आजादी का अमृत महोत्सव व दीक्षान्त समारोह में प्रतिभाग किया महाविद्यालय के कैडिट कार्यक्रम प्रशिक्षण तथा एन.सी.सी. ट्रेनिंग कार्यक्रमों में योगदान दिया।

दिनांक 12-11-2025 व दिनांक 14-11-2025 (17-11-2025) को राजकीय चिकित्सालय अल्मोड़ा के संयुक्त प्रयास से रक्तदान शिविर में प्रतिभाग लिया जिसके द्वारा 38 यूनिट ब्लड एकत्र किया गया।

दिनांक 7-11-2025 को वन्दे भारत कार्यक्रम तथा 8-12-2025 को एण्टी ड्रग सेल तथा साइबर सुरक्षा कार्यक्रम में भाग लिया गया।

सम्पूर्ण वर्ष 2025-26 में निम्नलिखित कार्यक्रमों को सफल कराया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त ने सभी को शुभकामनायें तथा आशीर्वाद प्रदान किया। इस वर्ष महाविद्यालय के 06 कैडिटों का चयन आर्मी में हुआ। जो देशहित व देश सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं। महाविद्यालय के एन.सी.सी. प्रभारी ले. (डॉ.) प्रणवीर प्रताप अपनी क्षमता तथा अपनी सम्पूर्ण मनोयोग में कैडिटों को ट्रेनिंग व कक्षायें संचालित व कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

ले.(डॉ0) प्रणवीर प्रताप
एन.सी.सी. प्रभारी

महाविद्यालय में प्रदत्त छात्रवृत्तियाँ

महाविद्यालय में शिक्षा को सुलभ और समावेशी बनाने के लिए विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक तथा मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है। छात्रवृत्ति के माध्यम से छात्रों की पढ़ाई का खर्च जैसे शुल्क, पुस्तकें, आवास और अन्य शैक्षणिक आवश्यकताओं में सहायता मिलती है।

वर्तमान में महाविद्यालय में मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना (CM Higher Education Encouragement Scholarship Scheme) उत्तराखण्ड सरकार के उच्च विभाग द्वारा वर्ष 2023 में प्रारम्भ की गई। जिसमें प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष में सरकारी कालेजों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे मेधावी छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। यह छात्रवृत्ति छात्रों को दो किस्तों में वितरित की जाती है। जिसमें स्नातक स्तर पर (प्रत्येक संकाय) प्रथम सेम, तृतीय सेम, पंचम सेम तथा स्नातकोत्तर स्तर पर (प्रत्येक विषय) तृतीय वर्ष एवं स्नातक और स्नातकोत्तर में पास आउट अधिकतम अंक पाने वाले छात्र-छात्राओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर

छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। महाविद्यालय में सत्र 2023-24 में 48, सत्र 2024-25 में 63, तथा सत्र 2025-26 में 66 छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

राष्ट्रीय छात्रवृत्ति-दशमोत्तर छात्रवृत्ति (National Scholarship Post Metric Scholarship) यह छात्रवृत्ति समाज कल्याण विभाग द्वारा प्रत्येक सत्र में महाविद्यालय में पंजीकृत संस्थागत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर (SC, ST, OBC, EWS) छात्र-छात्राओं को प्रदान की जाती है। उपर्युक्त योजनाओं के अन्तर्गत राशि सीधे छात्रों के बैंक खाते में डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) के माध्यम से भेजी जाती है। महाविद्यालय में चल रही छात्रवृत्ति योजनाऐं न केवल छात्रों को आर्थिक संबल प्रदान करती हैं, बल्कि उच्च शिक्षा में नामांकन बढ़ाने में भी सहायक हैं।

डॉ. अंजुम अली

नोडल अधिकारी

रोवर्स - रेंजर्स इकाई

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट में वर्ष 2023-24 से रोवर्स-रेंजर्स इकाई गठित है। महाविद्यालय में रोवर्स-रेंजर्स इकाई के अन्तर्गत लगभग 56 छात्र-छात्रायें पंजीकृत हैं जिनमें 27 रोवर्स हैं तथा 29 रेंजर्स हैं।

रोवर्स-रेंजर्स इकाई ने वर्ष 2025-26 के दौरान सेवा, अनुशासन और नेतृत्व की भावना को केन्द्र में रखते हुए अनेक सार्थक गतिविधियों का सफल आयोजन किया। इकाई के रोवर्स एवं रेंजर्स ने सामुदायिक विकास, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता, तिरंगा रैली, ब्लड डोनेशन जैसे क्षेत्रों में सक्रिय योगदान दिया। प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह, समर्पण और जिम्मेदारी के साथ कार्य करते हुये समाज व संस्थान दोनों स्तर पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ा।

इकाई की ओर से वर्ष भर में आयोजित गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं-

(1) अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस- दिनांक 4-6-2025 को पत्रांक संख्या 767/XXV-04/2025 दिनांक 15-05-2025 के तहत रा.स्ना.महा. द्वाराहाट में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के तत्वाधान में महाविद्यालय की रोवर्स-रेंजर्स इकाई द्वारा पौधारोपण अभियान संचालित किया गया। साथ ही पुराने वृक्षों व पौधों की गुड़ाई व साफ-सफाई का कार्य भी किया गया।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस- दिनांक 21-06-2025 को उच्च शिक्षा निदेशालय देहरादून के पत्रांक संख्या 1684/डिग्री विविध/2025-26 दिनांक 18-6-2025 के अनुपालन में महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त की अध्यक्षता में महाविद्यालय के रोवर्स-रेंजर्स इकाई, एन.एस.एस. के स्वयं सेवी, एन.सी.सी. क्रेडिट तथा रेडक्रॉस यूथ के संयुक्त तत्वाधान में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया तथा लोगों को योग हेतु जागरूक किया गया।

(3) पौधारोपण कार्यक्रम- दिनांक 21-7-2025 को रा.स्ना.महा., द्वाराहाट में ''हरेला पर्व'' के तत्वावधान में वृद्धि स्तर पर ''पौधा रोपण कार्यक्रम'' आयोजित किया गया, जिसमें रोवर्स - रेंजर्स इकाई द्वारा विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों जैसे- मोरपंखी, सुरई, तेजपत्ता, ऑवला, चीड़, देवदार, सूरजमुखी व गुलाब आदि का रोपण किया गया।

(4) तिरंगा रैली- रा.स्ना.महा., द्वाराहाट में दिनांक 12-08-2025 को आजादी के ''अमृत महोत्सव के कार्यक्रम'' के अन्तर्गत महाविद्यालय से बूंगा ग्राम तथा छतेना ग्राम मुख्य सड़क पर ''तिरंगा रैली'' का आयोजन किया गया जिसमें रोवर्स-रेंजर्स इकाई द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया गया।

(5) ब्लड डोनेशन कैम्प- दिनांक 14 नवम्बर 2025 को रा.स्ना.महा., द्वाराहाट में संयुक्त शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा के निर्देशानुसार रोवर्स-रेंजर्स इकाई, NSS, NCC तथा रेडक्रॉस

सोसाइटी के संयुक्त तत्वाधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के 34 विद्यार्थियों तथा शिक्षकों एवं शिक्षणेतर स्टाफ द्वारा रक्तदान किया गया।

(6) क्रीड़ा समारोह- रा.स्ना.महा., द्वाराहाट में दिनांक 20-22-2025 से 21-11-2025 तक दो दिवसीय क्रीड़ा समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें रोवर्स-रैंजर्स इकाई द्वारा परेड मार्च तथा खेलों में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया गया।

डॉ. आशा पारछे एवं डॉ. अशोक कुमार
कार्यक्रम अधिकारी

गुरू तेगबहादुर शहीदी दिवस समारोह

दिनांक: 14-11-2025

उत्तराखण्ड शासन, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्राप्त निर्देशों के क्रम में ''गुरू तेग बहादुर शहीदी दिवस 25 नवम्बर'' के अनुपालन में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट (अल्मोड़ा) में दिनांक- 14-11-2025 को निबन्ध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोति, स्वरचित कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय- ''गुरु तेगबहादुर के जीवन, शिक्षाओं और शहीदी दिवस'' रहा।

महाविद्यालय के सभागार में प्रतियोगिताओं का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त जी की अध्यक्षता में दीप प्रज्जवलन एवं सरस्वती वन्दना के साथ किया गया। तीनों प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के सभी संकाय के छात्र-छात्राओं ने पूर्ण मनोयोग से प्रतिभाग किया। प्रो. नाजिश खान, डॉ. आशा पारछे एवं डॉ. राजेश प्रसाद द्वारा निर्णायक मण्डल में संयोजक की भूमिका निभाई। डॉ. सुमन गढ़िया, डॉ. शर्मिष्ठा, डॉ. पूनम पन्त, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अंजली एवं डॉ. रेनू द्वारा उनका सहयोग किया गया।

निबन्ध प्रतियोगिता में 10 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें कु. सीमा, बी.कॉम पंचम सेमेस्टर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में 4 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें कु. पूजा लमकोटी, एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्वरचित कविता में पांच प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें कु. रिया, बी. कॉम तृतीय सेमेस्टर द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त किया गया।

अन्त में प्राचार्य महोदय के आशीष वचनों एवं राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

डॉ. पूनम पन्त, इतिहास विभाग

साइबर भारत सेतु प्रशिक्षण 2025-26

उच्च शिक्षा विभाग, देहरादून उत्तराखण्ड शासन तथा निदेशक, उच्च शिक्षा, गोलापार हल्द्वानी नैनीताल के पत्रांक संख्या 4514/ITDA/2025-26 दिनांक 15.11.2025 तथा डिग्री प्लान 4939/2025-26 दिनांक 29 नवंबर 2025 के क्रम में महाविद्यालय में नामित Chief Information Security Officer (CISO) प्रतिनिधि का विवरण मांगा गया था, जिसे संकलित कर शासन को पत्र संख्या 3964 दिनांक 15.10.2025 द्वारा प्रेषित किया गया था।

उपरोक्त के क्रम में सूचना प्रौद्योगिकी विकास एजेन्सी के पत्र संख्या: 4514 / दिनांक: 15.11.2025 का संदर्भ ग्रहण करना चाहें जिसके द्वारा दिनांक 04 एवं 05 दिसम्बर, 2025 को Cyber Bharat Setu & CISO Traning Program का आयोजन CERT- Uttarakhand एवं CERT-In, भारत सरकार के द्वारा Civil Services Institute (CSI), Rajpur Dehradun में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें नामित विभागीय CISO को अनिवार्य रूप से प्रतिभाग किया

जाना आवश्यक है उपरोक्त पत्रों के अनुपालन में स्व0 श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट के नामित प्रतिनिधि CISO डॉ. प्रणवीर प्रताप असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग द्वारा उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

Cyber Bharat Setu & CISO Traning Program में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई।

साइबर भारत सेतु (Cyber Bharat Setu) भारत की एक साइबर सुरक्षा पहल है, जिसका उद्देश्य क्षमता निर्माण (Capacity Building), नवाचार (Innnovation), और सक्रिय रक्षा रणनीतियों के माध्यम से एक साइबर-सक्षम और सुरक्षित भारत बनाना है, जिसमें सरकारी अधिकारियों, नागरिकों और निजी क्षेत्र के लिए साइबर जागरूकता और प्रशिक्षण शामिल है, ताकि वे साइबर खतरों से प्रभावी ढंग से निपट सकें और एक मजबूत डिजिटल इकोसिस्टम का निर्माण कर सकें।

कार्यक्रम की रूपरेखा (Outline of the Program)

- क्षमता निर्माण (Capacity Building): मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारियों (CISOs) और आईटी पेशेवरों को उन्नत साइबर खतरों और बचाव तकनीकों पर प्रशिक्षित करना।
- जागरूकता अभियान (Awareness Campaigns): नागरिकों और संस्थानों को मजबूत पासवर्ड, सुरक्षित डेटा उपयोग और संदिग्ध लिंक से बचने जैसी बुनियादी साइबर स्वच्छता के बारे में शिक्षित करना।
- प्रौद्योगिकी और नवाचार (Technology & Innovation): आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A) और अन्य तकनीकों का उपयोग करके सुरक्षा समाधान विकसित करना, जैसे कि AI- आधारित गवर्नेंस एप्लीकेशन।
- राष्ट्रीय अभ्यास (National Drills): राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा अभ्यास (National Cyber Security Drills) आयोजित करना ताकि साइबर संकट प्रबंधन योजनाओं (Cyber Crisis Management Plans) का परीक्षण और सुधार किया जा सके।
- PPP मॉडल (Public-Private Partnership): सरकार और उद्योग के बीच सहयोग को बढ़ावा देना, जैसे कि CERT-In और निजी कम्पनियों के साथ मिलकर काम करना।
- राज्य-स्तरीय पहल (State-Level Initiatives): 'साइबर कमांडो' जैसे स्थानीय साइबर योद्धाओं को तैयार करना और 'त्रिनेत्र ऐप' जैसे राज्य-विशिष्ट डेटाबेस बनाना।

इसका महत्व (Its Importance)

- डिजिटल इंडिया की सुरक्षा: डिजिटल क्रांति के साथ बढ़ते साइबर अपराधों, जैसे AI- संचालित फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग हमलों ने निपटना।
- सक्रिय बनाम प्रतिक्रियात्मक सुरक्षा: केवल हमलों के बाद प्रतिक्रिया करने के बजाय, सक्रिय रूप से खतरों को पहचान करना और उनसे बचाव करना।
- नागरिकों का सशक्तिकरण: हर नागरिक को अपनी डिजिटल सुरक्षा के लिए जिम्मेदार बनाना और उन्हें सशक्त बनाना।
- आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा: वित्तीय क्षेत्र (BFSI) और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को साइबर हमलों से बचाना।
- साइबर स्वच्छता (Cyber Hygiene): डिजिटल दुनिया में व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देना, जो एक मजबूत सुरक्षा कवच बनाता है। संक्षेप में, 'साइबर भारत सेतु' भारत को एक सुरक्षित और साइबर-सक्षम राष्ट्र बनाने के लिए एक समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण है, जो जागरूकता, प्रशिक्षण और तकनीकी शक्ति के माध्यम से काम करता है।
- इस उक्त प्रोग्राम एवं ट्रेनिंग प्रशिक्षण 4 नवम्बर 2025 से 5 नवम्बर 2025 तक प्राप्त करके CISO अपने महाविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक कर्मचारी एवं छात्र-छात्राओं के इसके बारे में जानकारी उपलब्ध करना और जिससे भविष्य में महाविद्यालय के समस्त सम्मानित जनता वरिष्ठ प्राध्यापक कर्मचारी एवं छात्राओं को इसका लाभ प्राप्त हो सके।

डॉ. प्रणवीर प्रताप
CISO

युवा संसद (तरुण सभा) समारोह 2025-26

युवा संसद (तरुण सभा) समारोह मनाये जाने के सम्बन्ध में उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड शासन तथा निदेशक, उच्च शिक्षा से प्राप्त निर्देशों तथा 674/50/युवा संसद 2025-26 दिनांक 12 नवम्बर 2025 के क्रम में स्व. श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में प्रातः 10:30 बजे महाविद्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण कर समस्त प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम का समूह गान किया। तत्पश्चात् युवा संसद (तरुणसभा) समारोह की रूपरेखा व मूल विषयों की चर्चा हेतु महाविद्यालय के सभागार में सभी प्राध्यापक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित हुए।

सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. महेन्द्र सिंह द्वारा अपने उद्‌बोधन में कहा कि सभी को युवा संसद (तरुण सभा) एक कार्यक्रम है जिसमें युवा छात्रों को संसदीय शैली में बहस, चर्चा और निर्णय लेने में भाग लेने का अवसर मिलता है। यह एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ वे राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं, और यह नेतृत्व, नागरिक जागरूकता और लोकतांत्रिक सिद्धांतों की समझ को बढ़ावा देता है। माँ सरस्वती के आह्वान हेतु द्वीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया। युवा संसद समारोह एक कार्यक्रम है जिसमें युवा छात्रों को संसदीय शैली में बहस, चर्चा और निर्णय लेने में भाग लेने का अवसर मिलता है। यह एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ वे राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं, और यह नेतृत्व, नागरिक जागरूकता और लोकतांत्रिक सिद्धांतों की समझ को बढ़ावा देता है तत्पश्चात् डॉ. प्रणवीर प्रताप, असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान, विभागाध्यक्ष और डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र के नेतृत्व में कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अंचलेश कुमार ने संसद युवा संसद समारोह की गतिविधियों के बारे में अवगत कराया एवं राष्ट्रीय गीत बन्दे मातरम के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

इसी क्रम में डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र, डॉ. नाज़िश खान, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी, डॉ. हेमचन्द्र दुबे विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं डॉ. उपासना शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग आदि ने अपने विचार रखे।

युवा संसद (तरुणसभा) कार्यक्रम में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया छात्र-छात्राओं ने संसद की महत्वपूर्ण पदों जैसे लोक सभा अध्यक्ष हर्षित नेगी लोक सभा एवं राज्य सभा प्रधानमंत्री, छात्रा गुंजन तिलकोठी, वित्त मंत्री, छात्रा हिमांशी, रक्षा मंत्री, छात्रा खुशबू रावत, स्वास्थ्य मंत्री, छात्र दीपक कुमार, गृहमंत्री, छात्रा चारू पुजारी, विदेश मंत्री, नूतन छात्र, खाद्य और उर्वरक मंत्री, गुंजन त्रिपाठी, छात्र और कृषि मंत्री, छात्र कंचन आदि पदों पर आसीन रहते हुए और विपक्ष में युवा सांसद सुमन, युवा सांसद संजना आर्य, मनीष, खुशी, महिमा, कविता आर्य, रक्षिता शाह, भावना नेगी ने रहते हुए अपने विचार रखे और उनके निराकरण और लागू करने के लिए अपनी जानकारी प्रदान की।

इस कार्यक्रम के द्वारा महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को युवाओं को सार्वजनिक मुद्दों से जुड़ने और उन पर राय बनाने के लिए प्रोत्साहित करना। नेतृत्व कौशल, नागरिक जागरूकता और लोकतांत्रिक सिद्धांतों की समझ को बढ़ावा देना। निर्णय लेने की क्षमता का विकास और संवर्धन करना।

संसदीय प्रक्रियाओं का अनुकरण करके छात्रों को वास्तविक संसद की कार्यप्रणाली से परिचित कराना। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. प्रणवीर प्रताप, नोडल अधिकारी (SWEEP) और डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र ने महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों को राष्ट्रगान के साथ इस कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रणवीर प्रताप, नोडल अधिकारी (SWEEP) और प्राध्यापिका डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी के द्वारा किया गया।

समस्त महाविद्यालय परिवार द्वारा इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण मनोयोग से कार्य किया गया। इस अवसर पर 110 छात्र-छात्राऐं, 17 प्राध्यापक और 09 कर्मचारी सहित कुल उपस्थिति 136 रही।

डॉ. प्रणवीर प्रताप एवं डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी
नोडल अधिकारी

एंटी-ड्रग सेल (नशा उन्मूलन समिति)

सत्र : 2025-26

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट के एंटी-ड्रग सेल द्वारा आख्यागत सत्र : 2025-26 के अंतर्गत निम्न कार्यक्रम आयोजित किये गये-

(1) इंडक्सन कार्यक्रम (दिनांक: 01-09-2025)- एंटी-ड्रग सेल के तत्वावधान में एक दिवसीय डंडक्सन कार्यक्रम दिनांक 01 सितम्बर, 2025 को महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.(डॉ.) डी.सी. पन्त ने कहा कि वर्तमान में युवा पीढ़ी को स्वयं व परिवार को नशे की गिरफ्त से दूर रखना अनिवार्य है। उनके द्वारा विद्यार्थियों व कार्मिकों को एंटी-ड्रग की शपथ दिलाई गई। महाविद्यालय के एंटी ड्रग की शपथ दिलाई गई। महाविद्यालय के एंटी ड्रग सेल के प्रभारी डॉ. अंचलेश कुमार ने विचार व्यक्त किया कि नशा समाज के लिए एक घातक बीमारी के रूप में उभरा है और विशेषकर युवा पीढ़ी को इन नशे की बुरी विपदा सेबाहर निकालना है। कार्यक्रम का संचालन एंटी ड्रग सेल के सदस्य डॉ. हेम चन्द्र दुबे द्वारा किया गया। जिसमें डॉ. भगवती प्रसाद का भी सहयोग रहा।

(2) विशेष व्याख्यान कार्यक्रम (दिनांक : 19-11-2025)- महाविद्यालय के एंटी-ड्रग सेल के तत्वावधान में दिनांक: 19 नवम्बर, 2025 को एक विशेष व्याख्यान सह शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम रा.से. योजना के एक दिवसीय बौद्धिक सत्र में संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त ने विचार व्यक्त किया कि वर्तमान समाज में युवाओं को नशे के लत से दूर रहकर समाज से इस बुराई को खत्म करना है। उन्होंने 'ड्रग फ्री देवभूमि' मिशन के अन्तर्गत उपस्थित स्वयंसेवियों तथा कार्मिकों को शपथ दिलाई एंटी-ड्रग सेल के प्रभारी डॉ. अंचलेश कुमार ने विचार व्यक्त किया कि पर्वतीय समाज से नशे को समाप्त करके सभी नागरिक अपने मूल्यवान जीवन को प्रेरणा दें। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. हेमचन्द्र दुबे ने कहा कि नशा एक अभिशाप है, इससे दूर रहना है। इस अवसर पर डॉ. भगवती प्रसाद ने भी एंटी-ड्रग से संबंधित अपने अनुभव साझा किये।

(3) नशा उन्मूलन पर कार्यशाला (दिनांक: 01-12-2025) - महाविद्यालय के एंटी-ड्रग सेल के तत्वावधान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पंत ने विचार व्यक्त किया कि नशा उन्मूलन प्रकोष्ठ द्वारा निरंतर ऐसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिससे महाविद्यालय व समाज में इसके विरूद्ध जागरूकता आयी है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रभारी थानाध्यक्ष श्रीमती मीना आर्या ने कहा कि युवा पीढ़ी को नशे की लत से दूर रहना चाहिए एवं नशीली वस्तुओं के तस्करी की सूचना तुरंत पुलिस को दें। एंटी ड्रग सेल के प्रभारी डॉ. अंचलेश कुमार ने कहा कि यह एक राष्ट्रीय अभियान है जिसमें ऐसे कार्यशाला का आयोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. हेम चन्द्र दुबे ने एंटी ड्रग पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. भगवती प्रसाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

डॉ. अंचलेश कुमार (संयोजक)
डॉ. हेम चन्द्र दुबे, डॉ. भगवती प्रसाद (सदस्य)

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई

राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme – NSS) का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं सेवा-भावना का विकास करना है। 'Not Me But You' के आदर्श वाक्य पर आधारित NSS इकाई की शुरुआत राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में 1887-1889 सत्र से प्रारंभ हुई।

आयोजित प्रमुख गतिविधियाँ -

1. सात दिवसीय विशेष शिविर

NSS का सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम सभा- डढोली में 19 फरवरी से 25 फरवरी 2025 तक आयोजित किया गया, जिसमें कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुमन गढ़िया एवं 50 स्वयंसेवियो द्वारा ग्रामसभा डढोली के अंतर्गत नदी, नालों एवं मंदिरों की स्वच्छता का अभियान, मतदाता जागरूकता संबंधी रैली, नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। बौद्धिक सत्र के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में द्वाराहाट पुलिस थाने के सब इंस्पेक्टर श्री भगवान सिंह एवं कांस्टेबल श्रीमती सरोज मेहता द्वारा साइबर सिक्योरिटी, महिला सशक्तिकरण, ड्रग्स एडिक्शन, साइबर स्पेस एवं ऑनलाइन फ्रॉड के विषय में विस्तार से जानकारियां प्रदान की गई। इस सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान आयोजित गतिविधियों पर निम्नलिखित के माध्यम से देखा जा सकता है :

https://www.youtube.com/watch?v= PRwxLRKA3M4&list=PL4dFs7ROHTj_d7lK1ogBNij7mBd1fsr9&pp=gAQB

2. राष्ट्रीय/महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन

2.1. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एक दिवसीय शिविर का आयोजन 8 मार्च 2025 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर किया गया।

2.2. राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम-8 अप्रैल 2025 महाविद्यालय में उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं को अल्बेंडाजॉल टेबलेट का वितरण किया गया।

2.3. विश्व पर्यावरण दिवस, योग संगम (Yoga Sangam) दिनांक 5 जून 2025 एवं 21 जून 2025

2.4. वृक्षारोपण कार्यक्रम -21 जुलाई 2025 को हरेला महोत्सव के अंतर्गत वन विभाग की सहायता से यह वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम महाविद्यालय परिसर में चलाया गया।

2.5. स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, संविधान दिवस, राष्ट्रीय एकता दिवस, राज्य स्थापना दिवस आदि महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्वो पर राष्ट्रीय सेवा योजना द्वाराहाट की सक्रिय भूमिका रहती है एवं इस दौरान स्वच्छता एवं जागरूकता संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

डॉ. सुमन गढ़िया
कार्यक्रम अधिकारी

अगर तुम्हें अपने मन के अनुकूल काम ना मिले तो जो कार्य तुम्हें मिले उसी में मन लगाने का प्रयास करो; क्योंकि कार्य करने से व्यक्ति कुछ-न-कुछ अवश्य सीखता है।

भारतीय संविधान दिवस समारोह

भारतीय संविधान दिवस समारोह मनाये जाने के सम्बन्ध में उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड शासन तथा निदेशक, उच्च शिक्षा से प्राप्त निर्देशों के क्रम में स्व. श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नतकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में प्रातः 10:30 बजे महाविद्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण कर समस्त प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम का समूह गान किया। तत्पश्चात् भारतीय संविधान दिवस की रूपरेखा व मूल विषयों की चर्चा हेतु महाविद्यालय के सभागार में सभी प्राध्यापक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित हुए।

सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. महेन्द्र सिंह द्वारा अपने उद्बोधन में सभी को भारतीय संविधान दिवस की बधाई देते हुए माँ सरस्वती के आह्वान हेतु द्वीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

तत्पश्चात् डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र के नेतृत्व में कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अंचलेश कुमार ने भारतीय संविधान एवं राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए सभी से भारतीय संविधान का आदर एवं सम्मान करने की आशा की।

इसी क्रम में डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र, डॉ. नाज़िश खान, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी, डॉ. हेमचन्द्र दूबे, विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं डॉ. बिपिन चंद्र सुयाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान आदि ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम के अन्त में डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र ने महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों आदि को भारतीय संविधान का आदर एवं सम्मान करने की शपथ दिलाई एवं राष्ट्रगान के साथ इस कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापिका डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी के द्वारा किया गया।

समस्त महाविद्यालय परिवार द्वारा इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण मनोयोग से कार्य किया गया। इस अवसर पर 110 छात्र-छात्राऐं, 17 प्राध्यापक और 09 कर्मचारी सहित कुल उपस्थिति 136 रही।

डॉ. महेन्द्र सिंह (गणित विभाग)
डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी (राज. वि. विभाग)

इंडियन इकोनामिक एसोसिएशन द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस

इंडियन इकोनामिक एसोसिएशन की 108वीं वार्षिक कॉन्फ्रेंस (21 से 23 दिसम्बर 2025) का आयोजन आई. आई.एम. यूनिवर्सिटी ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में किया गया।

कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य-

इस अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक कान्फ्रेंस में प्रतिभाग करने के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

अर्थव्यवस्था के अध्ययन और व्यवहार में नवीन विषय, अवधारणाएँ, नीतियाँ और बदलाव, वैश्विक घटनाओं और विकसित भारत के समक्ष चुनौतियाँ आदि।

वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अर्थशास्त्रियों की भूमिका एवं महत्व की पहचान करना।

शोधार्थियों के लिए नवीन विषय, नई तकनीकी और शोध की अन्य विधियों एवं प्रविधियों की जानकारी से अवगत होना।

कॉन्फ्रेंस का विषय-

कान्फ्रेंस का विषय ''विकसित भारत 2047 के लिए भारत का दृष्टिकोण: उभरती वैश्विक जटिलताओं

और वास्तविकताओं का परिप्रेक्ष्य'' (India's Approach to Viksit Bharat@ 2047: Perspective of Emerging Global Complexities and Realities) था।

कॉन्फ्रेंस के दौरान दी गई जानकारी-

तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री सूर्य प्रताप शाही, कृषि, शिक्षा एवं शोध मन्त्री ने भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं का विश्लेषण एवं आँकलन किया। इसके साथ-साथ उन्होंने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अर्थशास्त्रियों के योगदान पर विशेष चर्चा की। सर्वप्रथम इस कान्फ्रेंस में ''विकसित भारत के लक्ष्य की दशा में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत की वित्तीय अर्थव्यवस्था में सुधार'' विषय पर चर्चा की गई। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए उन्होंने कृषि के पुनरुद्धार पर चर्चा की। विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने बाजार में होने वाले विघटन को प्रबन्धित करने में डिजिटलीकरण और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विषय पर सारगर्भित चर्चा हुई। लार्ज लैंग्वेज मॉडल और स्मॉल लैंग्वेज मॉडल से सम्बन्धित विचारों को प्रस्तुतीकरण में स्थान दिया गया। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) में अर्थशास्त्र विषय की वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक डॉ. उपासना शर्मा ने डिजिटल इकोनामी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और लेबर मार्केट पर्सपेक्टिव इन विकसित भारत 2047 के सत्र में ''धार्मिक पर्यटन पर केन्द्रित राज्य में पर्यटन विकास की सम्भावनाएं एवं स्थानीय रोजगार (उत्तर प्रदेश राज्य का अनुभवजन्य अध्ययन)'' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

इसके साथ ही डॉ. उपासना शर्मा ने ''पर्सपेक्टिव ऑन द इकोनामिक डेवलपमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश टुवर्ड्स विकसित भारत'' के सत्र में को-चेयरपर्सन के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

इस कान्फ्रेंस में असम, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड समेत कई राज्यों के अर्थशास्त्रियों ने प्रतिभाग किया। इनमें प्रमुख रूप से प्रोफेसर श्री प्रकाश, प्रोफेसर इंदु वार्ष्णेय, प्रोफेसर सुमित्रा चौधरी, प्रोफेसर वन्दना चौधरी, प्रोफेसर जगदीश नारायण, आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा की कुलपति प्रोफेसर तरुणा गौतम, प्रोफेसर एन. एम.पी. वर्मा, प्रोफेसर उत्सव आनंद, डॉ. अजय कुमार तोमर, डॉ. डी.के. अस्थाना, डॉ. डिम्पल विज, डॉ. रविंद मटसेनिया, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. रेनू कुमारी आदि इस कान्फ्रेंस का हिस्सा रहे। इस सम्मेलन ने समावेशी, लचीले और सतत विकास को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ढाँचों और आर्थिक रणनीतियों की गहन समीक्षा के लिए उच्च स्तरीय बौद्धिक मंच का कार्य किया है। इसने शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, नीति-निर्माताओं, उद्योगपतियों, अर्थशास्त्रियों और विद्वानों को एक साथ लाकर वैश्विक चुनौतियों के बीच भारत के विकास मानचित्र पर विचार विमर्श किया गया है। इस प्रकार के अधिवेशन देश की आर्थिक नीतियों, शोध और बौद्धिक विमर्श को बढ़ावा देते हैं।

कॉन्फ्रेंस का महाविद्यालय/छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगिता-

- NPA (नई शिक्षा नीति 2020) के अनुसार, ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था और भारतीय ज्ञान प्रणाली के सापेक्ष विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना।
- छात्र-छात्राओं को अर्थशास्त्र विषय की समयानुसार व समयानुरूप जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थियों के ज्ञान, रुचि, अभिरुचि और कौशल के अनुसार स्थानीय से वैश्विक की ओर दिशा प्रदान करना।
- शोध छात्र-छात्राओं को नवीन विषयों के चयन, सृजनात्मक विचारों और सुझावों से परिचित कराए जाने हेतु शैक्षिक प्रशिक्षण भ्रमण अत्यन्त उपयोगी है।

डॉ. उपासना शर्मा
अर्थशास्त्र विभाग

योग सत्र

कॉलेज में छात्रों एवं प्राध्यापकों के लिए नियमित योग सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विद्यार्थी तो नियमित योग सत्रों में उपस्थित हो ही रहे हैं, बल्कि प्राध्यापकगण भी नियमित रुप से उपस्थित होकर उत्साह के साथ सहभागिता कर रहे हैं। इन योग सत्रों का उद्देश्य शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना है साथ में सभी को योग के प्रति जागरुक करना भी है।

इन सत्रों में योगासन, प्राणायाम, ध्यान एवं शिथिलीकरण (योग निद्रा) अभ्यास कराए जाते हैं, जिससे प्रतिभागियों को तनाव से राहत, एकाग्रता में वृद्धि तथा सकारात्मकता प्राप्त करने में मदद मिलती है।

विद्यार्थियों में योग करने को लेकर काफी उत्साह रहता है। जिससे उनके स्मरण शक्ति (Memory Power) में वृद्धि हुई और एकाग्रता (Concentration) बढ़ रही हैं। योगासन और सूक्ष्म व्यायाम से शरीर में लचीलापन (flexiblity), शरीर में ऊर्जा (Energy) और स्थिरता (Stability) आती है। जिससे विद्यार्थी शारीरिक रुप से अधिक फिट हुए हैं। ध्यान तथा प्राणायाम इत्यादि से विद्यार्थियों को स्ट्रेस मेनेजमेंट, अर्थात exams के दौरान होने वाले स्ट्रेस को हैंडल करने तथा उसको मैनेज करके मानसिक रुप से शांत रहने में मदद मिली है। इन अभ्यासों से मानसिक स्पष्टता (Mental clarity) आती है, जिससे विद्यार्थी आगे चलकर सही निर्णय लेने (Decision Making) में समर्थ होता है जो उसके उज्ज्वल भविष्य के विकास में कारगर साबित होती है।

प्रियंका जोशी
योग प्रशिक्षक

रक्तदान शिविर 2025-26

महाविद्यालय में दिनांक 14-11-2025 को बाल दिवस के अवसर पर संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा देहरादून, उत्तराखण्ड के पत्रांक संख्या 4046/ रक्तदान शिविर/2025-26 दिनांक 12-11-2025 के अनुपालन में उच्च शिक्षा विभाग तथा बीरा फाउण्डेशन की संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त के द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन का उद्घाटन किया गया। इसके उपरान्त महाविद्यालय के एन.सी.सी. कैडिट एन.एस. एस. की विद्यार्थी, रोवर्स रेन्जर्स की रेन्जर छात्र-छात्राओं ने इस रक्तदान शिविर में अपना योगदान दिया। इस अवसर पर वीटा फाउण्डेशन के तत्वाधान में स्व. बाल किशन जोशी चेरिटेबल ट्रस्ट ब्लड सेन्टर, हल्द्वानी, नैनीताल के ब्लड सेन्टर की अधिकारी, डॉक्टर द्वारा सभी का ब्लड प्रेशर, खून की जांच, वजन का नाप व स्वास्थ्य जांच करायी गयी इसके उपरान्त सभी में ठीक पाये जाने पर ब्लड का समूह किया गया। इसमें सभी में अपना योगदान दिया।

इस टीम में श्री हरीश गोस्वामी, डॉ. टीनू कुमार, संजय गोस्वामी, श्री वीरेन्द्र सिंह बिष्ट, श्री दीपक भट्ट, श्रीमती कविता गोस्वामी, तथा पंकज भट्ट ने स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. नाजिश खान, डॉ. अंजुम अली, डॉ. शेलेन्द्र, डॉ. आशा पारछे, डॉ. भावना पन्त, डॉ. रेनू, डॉ. भूपेन्द्र सिंह, डॉ. हेमचन्द्र दुबे, डॉ. प्रकाश चन्द्र, डॉ. देवजनी अधिकारी, डॉ. विपिन चन्द्र सुयाल, डॉ. अचलेश, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. सुमन गढ़िया, डॉ. अंजली, श्री चन्दन सिंह कठायत, श्रीमती चन्द्रा चौहान, ममता भट्ट, जीवन सिंह, श्री वैभव सिंह, श्री कुलदीप, श्री हरीश कुमार, श्री अनिल कुमार उपस्थित रहे। इस रक्तदान शिविर में सभी का मिलकर 34 यूनिट ब्लड का संग्रह हुआ। सभी ने अपना सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन व समापन ले0(डॉ.) प्रणवीर प्रताप के द्वारा किया गया।

ले0(डॉ.) प्रणवीर प्रताप
असि.प्रो. व नोडल अधिकारी

Gaining Innovative Knowledge
A Report on the Educational Tour inBiotechnology Microbiology, Optical Fiber Communication, Chemistry and Physics Laboratory

Institution: Government Post Graduate College (GPGC) Dwarahat

Visited Institution: Bipin Tripathi Kumaon Institute of Technology (BTKIT) Dwarahat

Date of Visit:16-10-2025

Introduction : The undergraduate and postgraduate students of Science Department of Government Post Graduate College Dwarahat went on an educational tour to BTKIT Dwarahat to gain practical exposure to technical education and understand the academic environment of an engineering institution. The visit aimed to provide students with real-world knowledge beyond classroom learning.

Objectives of the Visit

- To provide students with practical exposure to laboratory techniques and instrumentation used in microbiology, biotechnology, molecular biology, optical fibre communication, optics, and electronics.
- To explore the infrastructure and academic environment of BTKIT.
- To understand the functioning of engineering departments and laboratories.

It was designed to bridge the gap between theoretical knowledge and real-world applications of life sciences.

Journey and Arrival

The journey started from GPGC Dwarahat in the morning. Students and faculty members traveled together and reached BTKIT Dwarahat in a short time. The group was warmly welcomed by the staff of BTKIT and guided towards the main academic block.

Activities and Learning Experiences

During the tour, students were shown different parts of the campus and were given brief explanations about the facilities.

1. Microbiology lab visit

Key activities

- **Lab Orientation**: Introduction to biosafety levels, sterile techniques, and lab protocols.
- **Demonstration of operating procedure of following instruments:**
  - Laminar air flow
  - Centrifuge
  - Autoclave
  - Incubator
  - Incubator cum shaker
  - pH instrument
  - vortex
  - Analytical balance
  - Water bath
- **Culture Techniques/demonstration**
  - Preparation of nutrient agar and selective media
  - Inoculation and incubation of microbial samples
- **Staining Procedures**:
  - Gram staining of bacteria

Learning Outcomes

- Understanding of microbial diversity and lab safety
- Hands-on experience with culturing and staining techniques

Professor **Dr. Mayank** and **Dr. Vandana Singh** demonstrated the respective instruments and procedures used in the Biotechnology and Microbiology laboratory in Bipin Tripathi Kumaun Institute of Technology (BTKIT), Dwarahat, Almora, Uttarakhand.

1. Molecular Biology Lab Visit

Key activities

- **Demonstration of following instruments and technique used in biotechnology lab**
  - Spectrophotometer
  - Gel electrophoresis
  - Gel documentation
  - DNA isolation instrument
- **Demonstration of techniques**
  - DNA extraction: Demonstration of genomic DNA isolation from bacterial cells
  - Gel eletrophoresis: Visualization of DNA fragments using agarose gel and UV transilluminator

Learning Outcomes

- Familiarity with molecular techniques used.
- Appreciation for the role of molecular biology in biotechnology and medicine.

2. Optical Fibre Communication Laboratory Visit

Key activities

- **Instruments and Equipments Observed:**

During the visit, the following instruments and setups were demonstrated in Electrical Engineering and Electronics Communication Engineering Department:

- Optical Fibre Communication Trainer Kit
- Laser and LED light sources
- Optical Power Meter
- Optical Fibre cables (Single-mode and Multi-mode)
- Fibre Splicing Unit
- Optical Spectrum Analyzer (OSA)
- Digital Storage Oscilloscope (DSO)
- Numerical Aperture measurement setup

- **Numerical Aperture (NA)**

Understanding how light is accepted and transmitted through the fibre core.

- **Attenuation and Loss**

observing how optical power reduces with distance or bends in the fibre.

- **Bending Loss Experiment**

demonstrating how fiber curvature affects signal strength.

- **Splicing and Connector Techniques**

learning about joining fibres with minimal loss.

- **Signal Transmission and Reception**

Observing data transmission using optical transmitter and receiver modules.

Professor **Dr. Vijaya Bhandari** demonstrated the respective instruments and procedures used in the Optical Fibre Communication laboratory.

Learning Outcomes

- Experimental learning to the instruments, working principles, and measurement techniques used in fibre optics.
- Understanding of how optical fibres play a crucial role in modern communication systems.

3. Applied Science Laboratory (Physics and Chemistry)

The **Applied Science Laboratory** visit provided students with **practical exposure** to various instruments, experiments, and safety procedures followed in applied science research and testing.During the visit, students observed different sections of the Applied Science Lab, including:

- **Physics Section:**
  - Optical Instruments: *Optical bench, lenses, mirrors, prisms, spectrometer.*
  - Electronics Instruments: *Diodes, transistors, logic gates, oscilloscopes, multimeters, and power supplies*
- **Chemistry Section:**
  - Preparation and analysis of chemical solutions
  - Titration and spectroscopic analysis
  - Study of corrosion, water hardness, and pH measurement

Students were encouraged to observe, ask questions, and understand the practical application of theoretical knowledge.

Learning Outcomes:

- Learned about the working principles and handling of scientific instruments.

- Understood the importance of calibration and accuracy in experiments.
- Enhanced teamwork and laboratory safety awareness.

4. Computer Laboratory

We visited computer laboratory in order to understand the setup, facilities, and procedures of a Computer Laboratory where online examinations such as NEET (UG), JEE (Main), CUET, or other competitive tests are conducted by the National Testing Agency (NTA) and similar organizations.

- **Infrastructure and Facilities Observed:**
  - **Computer Systems:**Equipped with high-performance computers arranged in rows for candidates.Each system is configured with secure software to access during exams.
  - **Server Room:**Houses the main server that connects all exam terminals. It is monitored by authorized technical personnel for network stability and data security.
  - **Biometric Verification Area:**The area used for candidate authentication through photograph, ID verification, and fingerprint scan.

Learning Outcomes:

- Understood the structure and operation of an online examination centre.
- Learned about the security protocols such as biometric verification and CCTV monitoring.
- Observed the technical setup required for smooth computer-based examinations.

Students' Reflections

Students expressed enthusiasm and curiosity throughout the tour. Many found the hands-on demonstrations particularly enlightening and felt more confident in pursuing careers in microbiology, molecular biology, biotechnology, and related fields.

A total of 34 students participated in the educational tour. Most students rated the overall experience as excellent or very good, appreciating the well-organized visit and exposure to practical learning environments. The feedback highlighted that students particularly valued observing laboratory instruments, campus facilities, and understanding the real-world application of scientific concepts.

Students' feedback can be observed via this link: https://forms.gle/rQmo1rkb9hynHLo88

- **Feedback Summary:**
  - Majority students described the trip as *excellent* or *very good*.
  - Students learned about various laboratory instruments and their working.
  - They gained practical exposure beyond classroom learning.
  - The campus environment and interaction with faculty created a motivating academic atmosphere.
  - Some students suggested that more such tours should be organized in the future for enhanced learning.

Conclusion:

The visit to the Applied Science Laboratory was highly informative and enriching. It provided valuable **practical experience** and **real-world understanding** of various scientific principles. The session helped students connect theoretical studies with laboratory practices and inspired interest in scientific research and innovation.

The staff members were kind, cooperative, and respectful. Their guidance and interaction during the visit was very helpful in understanding the organizational structure and daily functioning of the college. The visit was both educational and inspiring**.** Summarize the overall impact of the tour, benefits gained, and future scope.

Dr. Suman Garia
Dr. Devjani Adhikari
Dr. Prakash Chandra
Dr. Sharmishtha
Dr. Rizwana
Dr. Swati Joshi

❖❖❖

एंटी ड्रग सेल

CYBER BHARAT SETU REPORT

भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), काशीपुर द्वारा मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

108th Annual International Conference (IEA)

योग दिवस

Faculty Orientation Program for Jeevan Kaushal Employability Skills Program

भारतीय संविधान दिवस समारोह

महाविद्यालय यूथ रेड क्रॉस इकाई

शैक्षणिक भ्रमण

Intellectual Property Rights Cell

The Origin of the Universe

Dr Devjani Adhikari
Assistant Professor
Department of Chemistry

"Remember to look up at the stars and not down at your feet. Try to make sense of what you see and wonder about what makes the universe exist. Be curious. And however difficult life may seem, there is always something you can do and succeed at. It matters that you don't just give up."

- Stephen Hawking

Have you ever wondered how it all began while gazing up at the night sky? The Big Bang Theory is the most well-known of several ideas on the genesis of the universe. In 1927, Belgian cosmologist Georges Lemaître put out this notion.

This hypothesis posits that the universe originated from a very hot, dense point approximately 13.8 billion years ago. A singularity—a point of infinite warmth and density—was the starting point for this hot, dense beginning. The "Big Bang" got its name from the sudden, explosive expansion of this singularity. The universe expanded, resulting in the growth of space. The first stable atoms, a critical stage in the creation of matter, could be formed by the combination of protons and electrons as the cosmos cooled and expanded over hundreds of thousands of years. When Edwin Hubble observed that galaxies are moving apart in the 1920s, it was one of the major pieces of evidence that supported this notion. Another noteworthy observation was that the COBE (Cosmic Background Explorer) satellite directly matched the Big Bang model's predictions by confirming the presence of the CMB (Cosmic Microwave Background) and its accurate temperature spectrum. The measured ratios of light elements that emerged in the early cosmos, such helium and hydrogen, are also accurately predicted by this hypothesis.

Despite its broad support, the theory has certain shortcomings. For example, it cannot explain why the universe lacks magnetic monopoles that were predicted to form in the early universe, how causally disconnected regions of the universe could have the same temperature, or why the universe's geometry is unnaturally flat. To remedy the horizon and flatness issues, cosmic inflation can be added with some assistance.

The universe keeps expanding eternally as we attempt to learn more about it, leaving us with a cold, dark, and empty universe where even light from far-off galaxies cannot reach us.

❖❖❖

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है, और पश्चाताप पर ख़त्म।
बुद्धिमान दूसरों की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं।

A Brief Report On World Summit On Disaster Management Under The "She For STEM Program"

On behalf of Government Post Graduate College, Dwarahat, Bhawana Negi, a student of B.Sc. V semester and Dr. Rizwana Tabassum (Assistant Professor, Botany) actively participated in the World Summit on Disaster Management (WSDM) 2025, under the initiative of Vigyanshala International-She for STEM – Uttarakhand, held at Graphic Era (Deemed to be) University, Dehradun from 28th/ to/ 30th/ November/ 2025. The program was organised there with the aim of giving students a global exposure in STEM fields, disaster management, and leadership.

During the conference, Dr. Sushma Rawat, a geoscientist from ONGC, delivered an important lecture on the role of women in disaster management, while female scientists from ISRO highlighted the growing contributions of women in space technology, climate forecasting, and earth sciences. The international event attracted experts and participants from various countries and prestigious institutions, providing the students with extensive experience and multidimensional knowledge.

During the Summit, She for STEM fellows and STEM champions participated in an inspiring panel discussion with distinguished speakers. The students listened and learned the various strategies for balancing their personal problems and their academic performances being part of this prestigious platform. And they also shared their struggles and obstacles coming in their educational journey of their life in order to get the applicable solutions from the experts of the STEM fields. Representing Government Post Graduate College, Dwarahat, Bhawana Negi performed exceptionally well on this prestigious platform and received special recognition as the top scorer from our college in the She for STEM program.

Dr. Rizwana Tabassum
Asst. Prof. (Botany)

WORKSHOP REPORT

Faculty Orientation Program for *Jeewan Kaushal* Employability Skills Program
Organized by: Wadhwani Foundation Venue: Motiram Baburam Government P.G. College, Nainital Road, Haldwani Date: 13–15 November 2025 Participants from GPGC Dwarahat:
Dr. Devjani Adhikari (Assistant Professor)
Dr. Bhupendra Kumar (Assistant Professor)

1. Introduction

The Faculty Orientation Program for Jeewan Kaushal Employability Skills Program was conducted from 13th to 15th November 2025 at Motiram Baburam Government P.G. College, Nainital Road, Haldwani, in collaboration with the Wadhwani Foundation. This orientation program was designed to train faculty members in effective delivery of employability skills using modern pedagogical tools, blended learning techniques, and AI-enabled digital platforms.
From Government P.G. College, Dwarahat, Dr. Devjani Adhikari and Dr. Bhupendra Kumar represented the institution and successfully completed the training program.

2. Objectives of the Program

The Faculty Orientation Program aimed to:
- Equip faculty with skills to deliver the Jeewan Kaushal Employability Skills curriculum efficiently.
- Enhance understanding of transformative and student-centric teaching approaches.
- Develop proficiency in GenAI-based platforms and Google Classroom for instructional delivery.
- Strengthen faculty capacity in learner engagement, assessment, and progress monitoring.
- Introduce structured approaches for teaching soft skills, digital literacy, and workplace readiness.

3. Program Overview and Session Details

3.1 Orientation & Digital Platform Familiarization

Participants were introduced to:
NextGen GenAI Platform for interactive learning and lesson delivery
Orientation calendar, login steps, and batch codes

Digital resources for faculty development and content administration

3.2 Understanding Employability Skills & Skill Gaps
The session emphasized:
- Difference between hard skills and soft skills
- Rising demand for soft skills across all industries
- Increasing skill gap due to technological evolution
- Survey data from 2000+ companies highlighting demand for: Effective communication
- Problem-solving abilities Customer centricity
- Adaptability and workplace ethics
- Teamwork and interpersonal skills
- The trainers highlighted that employability skills are critical for improved student outcomes and job market success.

3.3 Content Structure and Jeewan Kaushal Modules
The program discussed the Wadhwani Foundation's content strategy aligned with *Jeewan Kaushal*, which includes:
- Communication Skills (verbal, written, and digital)
- Leadership and Teamwork
- Professionalism and Work Ethics
- Problem-Solving and Innovation
- Digital Skills and Data Safety
- Customer-Centric Behaviour
- Interview Preparation & Self-Presentation Skills
- Real-life examples, case studies, and relatable workplace scenarios were demonstrated to enhance faculty understanding.

3.4 Teaching Methodology: Watch–Think–Do–Collaborate
An experiential learning approach based on Kolb's Learning Cycle was adopted:
- Watch – Engaging digital video lessons
- Think – Conceptual reflection and internalization
- Do – Practical exercises, simulations, and real-world tasks
- Collaborate – Peer interaction, group discussions, and shared learning
- This structure promotes high-order thinking, self-reflection, and active participation among learners.

3.5 Use of AI-Enabled Tools
The participants were trained to utilise:
My Tutor (For Students)
- Instant academic assistance
- Summarized lessons
- Interview preparation tools
- Interactive questioning

My Mentor (For Faculty)
- AI-generated discussion prompts
- Insights on common student difficulties
- Guidance for more effective session delivery
- Real-time support for blended learning
- These tools help streamline teaching and improve learner engagement and outcomes.

4. Participation from GPGC Dwarahat
The participants from Government P.G. College, Dwarahat.

Dr. Devjani Adhikari, and Dr. Bhupendra Kumar, attended all sessions sincerely and engaged actively in discussions, digital tool demonstrations, and content practice. Their participation reflects the institution's commitment to strengthening *Jeewan Kaushal* skill development initiatives for students.

5. Key Outcomes
The faculty members gained:
- Comprehensive understanding of Jeewan Kaushal Employability Skills modules
- Ability to design and deliver blended learning-based employability sessions
- Skill in operating GenAI platforms
- Improved techniques for student communication, engagement, and assessment
- Awareness of industry-based skill requirements and learning outcomes
- Practical insights into AI-supported teaching tools
- These outcomes will significantly contribute to enhancing employability training at GPGC Dwarahat.

6. Conclusion
The Faculty Orientation Program for Jeewan Kaushal Employability Skills, held at MBGPG College, Haldwani, from 13–15 November 2025, was highly beneficial for the participating faculty.
Dr. Devjani Adhikari and Dr. Bhupendra Kumar successfully completed the training. The orientation program provided updated pedagogical tools, digital teaching resources, and AI-based support systems that will play an important role in improving students' employability, confidence, and workplace readiness in the coming academic sessions.

Dr. Devjani Adhikari, Chemistry Deptt.
Dr. Bhupendra Kumar, Physics Deptt.

बौद्धिक सम्पदा अधिकार

(Intellectual Property Rights)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में शैक्षिक सत्र-2025-26 में उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद(UCOST) देहरादून द्वारा प्रायोजित बौद्धिक सम्पदा प्रकोष्ठ का गठन किया गया है इस प्रकोष्ठ के तहत विद्यार्थियो को बौद्धिक संम्पदा अधिकार एंव उनके विभिन्न आयामों जैसे पेटेन्ट, जी0आई0 टेक, लोगो, टेडमार्क, कापी राइट, औद्योगिक डिजाइन, पादप किस्म आदि के बारे में जानकारी प्रदान करना है बौद्धिक संम्पदा अधिकार किसी व्यक्ति को उनके मूल रचनात्मक कार्यो जैसे अविष्कार डिजाइन, साहित्यक कार्य आदि के लिए दिये गये कानूनी अधिकार हैं। इन अधिकारों के माध्यम से निर्माता या रचनाकार को एक निश्चित अवधि के लिए अपनी बौद्धिक रचनाओं पर विशेष अधिकार प्राप्त होता है। ताकि वह उनका उपयोग कर सकें और लाभ कमा सके जिससे नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा मिले। बौद्धिक सम्पदा अधिकार के मुख्यत: निम्न आयाम हैं-

01- **पेटेंट** - नए और उपयोगी आविष्कारों को कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है। जिससे आविष्कारक को एक निश्चित अवधि के लिए अपने आविष्कार का उपयोग करने का विशेष अधिकार मिलता है।

02- **ट्रेडमार्क**- किसी कम्पनी के ब्रांड नाम, लोगो और संयोगन को बचाता है ताकि ग्राहकों को उत्पादों और सेवाओ को अलग पहचाने में मदद मिल सके।

03-**कापी राइट**- साहित्यक, कलात्मक और संगीत कार्यो की सुरक्षा करता है।

04 **औद्योगिक डिजाइन**- किसी उत्पाद के सजावटी या दृश्य स्वरूप की सुरक्षा करता है जिससे औद्योगिक रूप दोहराया न जा सके।

05-**पौधों की किस्में**- नयी पोधों की किस्में के प्रजनन कर्ताओं के अधिकारो की रक्षा करता है।

इस प्रकोष्ठ द्वारा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट द्वारा 31.10.2025 को महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के प्राध्यापक श्री विपिन चन्द्र सुयाल द्वारा बौद्धिक अधिकारो के इतिहास एवं इनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया। इसी क्रम में वनस्पति विज्ञान के प्राध्यापिका डॉ0 स्वाति जोशी ने अलग-अलग ब्रांड्रों को पहचानने और उपभोगता जागरूता विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी क्रम में राजनीतिक शास्त्र के प्राध्यापक डॉ0 शैलेन्द्र कुमार ने कॉपीराइट व पेटेंट कानून से जुड़ी जानकारी से विद्यार्थियों को अवगत कराया। दिनांक-31.11.2025 को उत्तराखण्ड को प्राप्त भौगोलिक संकेतों (GI tags) में सम्मिलित ऐंपण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न ऐपण कला को गेरू एवं बिस्वार((पीसे चावल का सफेद रंग) द्वारा शुभ ज्यामितीय और धार्मिक आकृतियाँ बनाई गयी।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 डी0सी0 पन्त द्वारा बौद्धिक सम्पदा के विभिन्न आयामों से जागरुकता होने को आवश्यक बताया गया तथा अधिक से अधिक विद्यार्थियों को आयोजनों में प्रतिभाग हेतु प्रेरित किया गया। इस प्रकोष्ठ में विषय-विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन व्याख्यानों हेतु आमंत्रित किया जा रहा है। जिससे विद्यार्थी एवं संकाय सदस्य इस विषय पर नवीन दृष्टिकोण और ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

श्री विपिन चन्द्र सुयाल
समन्वयक बौद्धिक सम्पदा प्रकोष्ठ

Gaining Innovative Knowledge

A Report on the Educational Tour in Pharmacy Laboratory, Chemistry Laboratory, Electronics Laboratory, Civil Engineering Laboratory and Engineering Workshop.

Institution: Government Polytechnic College Dwarahat, Almora, Uttarakhand

Visited Institution: Government Polytechnic College Dwarahat, Almora, Uttarakhand

Date of Visit: 11-11-2025

Introduction

The undergraduate students of Science Department of Government Post Graduate College, Dwarahat, went on an educational tour to Government Polytechnic College Dwarahat to gain practical exposure to the technical education and understand the academic environment of an engineering institution. The visit aimed to provide students with real-world knowledge beyond classroom learning.

Objectives of the Visit

- To provide students with practical exposure to laboratory techniques and instrumentation used in Pharmacy Laboratory, Chemistry Laboratory, Electronics Laboratory, Civil Engineering Laboratory and Engineering Workshop.
- To explore the infrastructure and academic environment of Government Polytechnic College, Dwarahat.
- To understand the functioning of pharmacy, engineering departments and laboratories.

It was designed to bridge the gap between theoretical knowledge and real-world applications of life sciences.

Journey and Arrival

The journey started from GPGC Dwarahat in the morning. Students and faculty members travelled together and reached Government Polytechnic College, Dwarahat in a short time. The group was warmly welcomed by the staff of Government Polytechnic College, Dwarahat and guided towards the main academic block. These are some glimpse of the educational Tour.

Activities and Learning Experiences

During the tour, students were shown different parts of the campus and were given brief explanations about the facilities.

1. Pharmacy Lab visit

Key activities

- Students visited Pharmacy laboratory where they learned how the medicines are made by the students of the polytechnic college. They were also familiarised with various instruments like Stethoscope, Mortar and Pestle, Autoclave, Centrifuge, Water bath, Digital Microscope, Analytical balance.
- Students also had hands on practice with mixing machine, sealing and packing machine.
- Students also measured their B.P by Stethoscope.

These are some glimpses of Pharmacy Laboratory

2. Chemistry Lab visit

Key activities:

- In Chemistry laboratory, students learnt about various chemical reagent which are used during the isolation of various pharmaceutical drugs.
- Students also learnt how pH of medicine and radicals are measured with the help of pH meter.
- Student got hands on training in analytical methods of chemistry like filtration,Tritration, measurement with Pipete and Burettc, Concial flask etc.
- Instructor of Polytechnc Mr. Sunil Arya also made students aware about the safety measures of chemistry laboratory.

Glimpses of Chemistry Laboratory

3. Civil Engineering Lab Visit

Key activities:

In this laboratory students were made aware about various instruments like Mixer machine (concrete machine), Impact machine, Tar viscometer, Hammer, Penetrometer etc.Teachers told the students that how the building material are made by the mixer machine and how the measurement of different components are done by the instrument.

The students also came to know how the setting of cement takes place and how the setting time is measured by machine.

Glimpses of Civil Engineering Laboratory

4. Library Visit

Students went through various books and Journals kept in the library. Students were told how the books are arranged in library through the Catalogue system.

5 . Workshop Visit

- Teachers told about melting of Iron. Students were told in which temperature iron melts and the change in colour during the melting process. After that the melting iron was used for making different goods like Key ring, toys, tools etc.
- Students were told, how iron is cut by using machine and mold in different cast by machine.
- In Carpentry workshop students were made aware about different tools used in carpentry and how modern furniture is made without using any nails.

Learning Outcomes:

- Students learnt how medicine is made by students of the polytechnic college. They were also familiarised with various instruments like Stethoscope, Mortar and Pestle, Autoclave, Centrifuge, Water bath, Digital Microscope, Analytical balance .
- Learnt about various chemical reagent which are used during the isolation of various. Pharmaceutical Drugs.
- Students also got to know how, iron is cut by using machine and mold in different cast by machine.

Students' Reflections

Students expressed enthusiasm and curiosity throughout the tour. Many found the hands-on demonstrations particularly enlightening and felt more confident in pursuing careers in Pharmacy, Civil Engineering, Mechanical Engineering and related fields.

A total of 15 students participated in the educational tour. Most students rated the overall experience as excellent or very good, appreciating the well-organized visit and exposure to practical learning environments. The feedback highlighted that students particularly valued observing laboratory instruments, college facilities, and understanding the real-world application of scientific concepts.

Conclusion:

The visit to the Pharmacy Laboratory was highly informative and enriching. It provided valuable **practical experience** and **real-world understanding** of various scientific principles. The session helped students connect theoretical studies with laboratory practices and inspired interest in scientific research and innovation.

The staff members were kind, cooperative, and respectful. Their guidance and interaction during the visit was very helpful in understanding the organizational structure and daily functioning of the college. The visit was both educational and inspiring.

Dr. Mahendra Singh
Dr. Bhupendra Kumar
Dr. Bhagwati Prasad

उस शरीर का क्या मूल्य, जिसमें जीवन न हो; उस जीवन का क्या मूल्य, जिसमें ज्ञान न हो, और उस ज्ञान का क्या मूल्य, जिसका उपयोग न हो।

Kalpana-She for STEM Programme Workshop: A Report

She for STEM programme is a joint initiative of the Uttarakhand State Council of Science and Technology (UCOST) and Vigyanshala International. It aims to empower young women in Uttarakhand by fostering their interest and participation in Science, Technology, Engineering, and Mathematics (STEM). It focuses on bridging the gender gap in STEM by providing support, resources, and mentorship opportunities to encourage women to pursue and excel in these areas.

Date and location of the workshop: It was conducted in the department of Science, Government Postgraduate College, Dwarahat, Almora, Uttarakhand, on 11th August, 2025.

The principal of the Government Post - Graduate College, Dwarahat, welcomed the undergraduate women participants emphasizing the importance of the programme as a wonderful initiative to pursue careers in science, technology, engineering, and mathematics. He also discussed the limitations of rural students and encouraged them to overcome these challenges with determination, hard work, and the right support and resources needed to succeed in STEM fields.

The coordinator of the UCOST, Mr. Saurabh Joshi, outlined the structure of the She for STEM programme. He also briefed the process of participation of the girl students in the field of STEM to get the accessibility of opportunities at global level.

Dr Devjani Adhikari anchored the programme, assuring all the students of every possible help and guidance in the way of getting benefits from the programme.

Dr Bhupendra Kumar and Dr Rizwana Tabassum assured the students that the programme may be a life-changing point by shaping their future and committed to providing them with the guidance and support they need in the way of opportunities in STEM fields.

Objectives of the programme:

Skill development: Providing training and resources to enhance technical and leadership skills for women in STEM.

Mentorship: Connecting participants with experienced women in STEM and promoting success stories to inspire others.

Promoting gender equality: Encouraging equal opportunities for women in STEM education and careers.

Awareness and outreach: Raising awareness about the importance of women in STEM fields and promoting success stories to inspire others.

Fostering a supportive community: Creating a network of female STEM students and mentors to provide a sense of belonging and encouragement.
Empowering young female leaders: Encouraging young women to pursue careers and leadership roles in STEM fields.

Highlighting the contributions of women in STEM: Showcasing the achievements and innovations of women in STEM to inspire future generations.

Promoting innovation and collaboration: Utilizing the perspectives and talents of women to contribute for solving global challenges in STEM.

Who can apply?

Girl students who are pursuing a B.Sc. 2nd year in any STEM discipline, can apply for the programme.

Key highlights of the structure of the programme:

- 3-month structured career development programme.
- 3 hours/week of interactive online sessions.
- Access to scholarships, research internships, and academic guidance.
- Certificates and long-term career support.

Committee for the programme:

Coordinator: Dr. Devjani Adhikari, Assistant Professor, Department of Chemistry, Government P.G. College, Dwarahat

Members: 1. Dr. Bhupendra Kumar, Assistant Professor, Department of Physics, Government P.G. College, Dwarahat

2. Dr. Rizwana Tabassum, Assistant Professor, Department of Botany, Government P.G. College, Dwarahat

Dr. Devjani Adhikari
Dr. Rizwana Tabassum
Dr. Bhupendra Kumar

''मुख्यमंत्री- विद्यार्थी शैक्षिक भारत दर्शन योजना (शैक्षिक भ्रमण योजना) 2024'' के अंतर्गत देहरादून / हल्द्वानी से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी का शैक्षिक भ्रमण

प्रस्तावना - उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित ''मुख्यमंत्री-विद्यार्थी शैक्षिक भारत दर्शन योजना (शैक्षिक भ्रमण योजना) 2024'' का उद्देश्य राज्य के विद्यार्थियों को भारत के विभिन्न ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक स्थलों से परिचित कराना है।

इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को देश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक धरोहरों और ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कराया जाता है, ताकि उनमें राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक जागरूकता तथा शैक्षणिक दृष्टिकोण का विकास हो सके।

इसी क्रम में देहरादून/हल्द्वानी क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिये चार दिवसीय शैक्षक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें गंतव्य स्थल था, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

कार्यक्रम का विवरण :

दिनांक - 03-11-2025 समय- सायं 6:30 बजे
स्थान - देहरादून/हल्द्वानी से बनारस प्रस्थान

हम सभी छात्र/छात्राएँ जो इस शैक्षिक भ्रमण के लिये अलग-अलग महाविद्यालयों से चयनित किये गये थे। हम सभी एम.बी.पी.जी कॉलेज, हल्द्वानी में मिले। जहाँ पर हमारे साथ एक सर और मैम थी। कुमाऊँ मण्डल से हम करीब 50 बच्चे थे। एम.बी. कॉलेज से बरेली तक का सफर हमने बस से तय किया। यह यात्रा हमारी उत्साह और जिज्ञासा से भरी हुई थी। फिर बरेली से 2:30 बजे की ट्रेन में हम बनारस को रवाना हुये। ट्रेन में हमें गढ़वाल मंडल के बच्चे भी मिल गये थे। अब हम 100 विद्यार्थी इस यात्रा में सम्मिलित हो गये थे। विद्यार्थियों में देश के सबसे बड़े और ऐतिहासिक विश्वविद्यालयों में से एक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को देखने की अभिलाषा स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

दिनांक- 04-11-2025 समय- सायं 03:30 बजे
स्थान - वाराणसी

शाम 3:30 बजे हम विद्यार्थियों का बनारस में आगमन हुआ। बनारस पहुँचते ही हम सभी बच्चों की ट्रेन की थकान दूर हो गयी, सभी को बहुत खुशी हुई कि आखिर हम बनारस पहुँच ही गये। बनारस के फेकल्टी गेस्ट हाउस में हमारा स्वागत हुआ। वहाँ हमारे साथ 4 एन.एस.एस के स्वयं सेवक थे। जो इस इस यात्रा में हम सभी के साथ ही थे। वहाँ पहुँचने पर हम बच्चों को शिक्षकों ने शुभकामनाएँ दी। हमारे खाने-पीने की बहुत अच्छी व्यवस्था थी। रूम भी हमें बहुत अच्छा मिला था। रात को भोजन करके हम सभी ने आराम किया। इस प्रकार हमारा ये दिन समाप्त हुआ।

दिनांक - 05-11-2025 समय - प्रात: 10:00 बजे
स्थान- विंध्याचल एवं सीतामढ़ी दर्शन

सुबह की शुरुआत हमारी चाय और नाश्ते के साथ हुई। फिर हम विंध्याचल मन्दिर के दर्शन के लिये निकल गये। हम सभी बच्चों के आने-जाने के लिये यातायात की व्यवस्था की गई थीं। मन्दिर काफी सुन्दर था। मन्दिर में प्रवेश करते ही हमें अलग ही शक्ति का आभास हुआ। हॉलाकि मन्दिर में काफी भीड़ थी। लेकिन हम सभी को माँ के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, दर्शन करने के बाद हम सभी ने दिन का भोजन किया। फिर हम सभी सीतामढ़ी के दर्शन के लिये निकल गये। काफी सफर तय करने के बाद हम सीतामढ़ी पहुँच ही गये। सीतामढ़ी मन्दिर बेहद सुन्दर था। माँ सीता के अनुपम छवि के दर्शन हमने किये, मन्दिर में जो वातावरण था, मन को शांति प्रदान करने वाला था। कमल के खिले पुष्प, हनुमान जी महाराज का विराट स्वरूप तथा भगवान शिव की जटा से बहती गंगा का दृश्य मन को मनमोहित करने वाला था। मन्दिर से आने का हमारा मन तो नहीं था, लेकिन समय-सीमा को देखते हुये हम सभी मन्दिर

से गेस्ट हाउस के लिये निकल गये। आने के बाद हम सभी ने रात का भोजन किया और सभी बच्चे सोने के लिये अपने कमरों में चले गये। इस तरह हमारा ये दिन समाप्त हुआ।

दिनांक 06-11-2025 समय - प्रात: 10:00 बजे

स्थान- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भ्रमण (पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, म्यूजियम, एवं विभिन्न विभाग) एवं सायं काल बाबा विश्वनाथ धाम के दर्शन।

इस दिन हम विद्यार्थियों ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विस्तृत भ्रमण किया। हमें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और संग्राहलयों का अवलोकन कराया गया। हम विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों और शोधार्थियों से बातचीत की। जिससे हमें पता चला कि वहाँ के शिक्षा का स्तर काफी ऊँचा था। बहुत अच्छी तरीके से वहाँ बच्चों को पढ़ाया जाता था। जिससे हमें भी प्रेरणा मिली, कि हम भी अपनी एम.ए. की पढ़ाई B.H.U. से ही करें।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के परिसर की भव्यता और अनुशासित वातावरण ने विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव डाला। सच में वहाँ की शिक्षा प्रणाली को देखकर मुझे अहसास हुआ कि असल में पढ़ाई कैसे की जाती है।

विश्वविद्यालय से प्रस्थान करने के बाद हम सभी श्री विश्वनाथ मन्दिर के दर्शन के लिये गये। वहाँ की कुछ यादें कैमरे में कैद कर हम सभी वहाँ से गेस्ट हाउस में दिन का भोजन करने के लिये आ गये। थोड़ा सा आराम करने के बाद हम सभी म्यूजियम देखने के लिये चल पड़े। म्यूजियम में हमने वे सारी चीजें देखीं, जो आज तक हमने सिर्फ किताबों में पढ़ी थी। जैसे- कुषाण काल के सोने के सिक्के, भारत रत्न, हार, अंगूठी इत्यादि चीजें जो काफी पुराने समय की थी। गुप्तकाल के समय की कुषाण काल की। वहां हमने पांडुलिपि देखी, उस समय का भारत का मैप देखा। म्यूजियम देखकर हमें बहुत अच्छा लगा। उसके बाद हम सभी गंगा घाट के लिये निकल गये। गंगा घाट पहुंचकर सर ने हम सभी बच्चों को नौका विहार कराया। बहुत सुकून महसूस हुआ वहां बैठ कर।

नौका विहार करने के बाद हम सभी काशी विश्वनाथ महाराज के दर्शन करने के लिये चल पड़े, हमने बनारस की गलियों को घूमते हुये मन्दिर तक का सफर तय किया। मन्दिर में प्रवेश करते ही एक सकारात्मक ऊर्जा का आभास हमें महसूस हुआ। और काशी विश्वनाथ महाराज के दर्शन का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ।

प्रभु के दर्शन करने के बाद हम सभी बनारसी गलियों में घूमते हुए, बनारसी पान का स्वाद लेते हुये अपने गंतव्य की ओर बढ़े। गेस्ट हाउस आने के बाद हमने भोजन किया। और सभी बच्चों ने एक-दूसरे से अपना अनुभव साझा किया।

दिनांक 07-11-2025

बाबा काल भैरव, सारनाथ एवं सर्वेश्वर मंदिर दर्शन

इस दिन हमें बाबा काल भैरव के दर्शन करवाये गये। दर्शन करने के बाद में भगवान बुद्ध के तीर्थ स्थल सारनाथ का भ्रमण करवाया गया। सारनाथ भी काफी सुन्दर स्थल था। वहाँ हमें भगवान बुद्ध के जीवन को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। सारनाथ का भ्रमण करने के बाद हमने वहाँ का बाजार घूमा, जो काफी बड़ा था। उसके बाद हम सर्वेश्वर महामन्दिर धाम गये। जो बहुत ज्यादा सुन्दर था। इसमें सात तल थे। हमने सबसे निचले तल का भ्रमण किया। इस मन्दिर की विशेषता यह थी कि यहाँ ध्यान करके मन को शांति प्राप्त होती है। सर्वेश्वर मन्दिर का भ्रमण करने के बाद हम दिन का भोजन करने के लिये गेस्ट हाउस आये। खाना खाने के बाद हम फिर से महात्मा बुद्ध के तीर्थ स्थल का भ्रमण करने गये। वहाँ से आने के बाद हम थोड़ा बाजार में घूमे। फिर गेस्ट हाउस आ गये। रात्रि का भोजन करने के बाद हमने अपने बैग पैक किये और गेस्ट हाउस को अलविदा कर हम सभी बनारस रेलवे स्टेशन पहुँचे। वहाँ से बरेली तक का सफर हमने ट्रेन से तय किया। बरेली पहुंचकर गढ़वाल मण्डल के बच्चे दूसरी बस में बैठे और कुमाऊँ मण्डल के बच्चे अलग बस में बैठे। हमारी यह यात्रा बहुत मंगलमय रही। और यह ट्रिप हमें हमेशा याद रहेगा।

निष्कर्ष : ''मुख्यमंत्री-विद्यार्थी शैक्षिक भारत दर्शन योजना 2024'' के अंतर्गत यह भ्रमण कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभकारी और प्रेरणादायक रहा। इस यात्रा ने हमें न केवल शैक्षणिक रुप से समृद्ध किया, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं की आत्मा से भी जोड़ा।

रूचि पाण्डे
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

Ashtalakshmi Darshan Youth exchange Programme

अष्टलक्ष्मी दर्शन कार्यक्रम उत्तरपूर्वी सरकार द्वारा चलाया गया कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के अन्य राज्यों को उत्तरपूर्वी राज्यों को जानने के लिए शुरु किया गया है।

यह कार्यक्रम 1 नवम्बर 2025 से 14 नवम्बर 2025 तक संचालित हुआ जिसमें उत्तराखण्ड और गोवा दो राज्यों के छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के प्रत्येक जिले से 1 व 2 छात्र/छात्राओं का चयन किया गया। जिसमें से मेरा चयन अल्मोड़ा जिले के जी.पी.जी. कॉलेज, द्वाराहाट से हुआ।

इस कार्यक्रम में हमारे उत्तराखण्ड से 20 विद्यार्थी तथा दो शिक्षक गए थे। जिसमें डॉ. दीपा सिंह तथा डॉ. अरुण चतुर्वेदी सर ने इस कार्यक्रम में हमें निर्देशित किया। हम सभी विद्यार्थी व शिक्षक 30 अक्टूबर 2025 को हल्द्वानी के एम.बी. जा.पी.जी. कॉलेज से दिल्ली के इन्दिरा गांधी एयरपोर्ट को प्रात: 11 बजे निकले तथा 31 अक्टूर 2025 को सुबह 6 बजे पहुंचे। प्रात: 11:30 बजे को हमारी फ्लाइड ईटानगर के लिए निकली और 2:30 बजे को ईटानगर पहुंची शाम 5:00 बजे हम सभी RGU में पहुंचे जहां हमारा भव्य स्वागत हुआ।

1 नवम्बर से हमारा प्रशिक्षण, भ्रमण, खेल-कूद तथा सांस्कृतिक प्रोग्राम हुए जिसमें हमने नार्थईस्ट के बारे में बहुत कुछ जाना, समझा और देखा। इसके अन्तर्गत हमने नॉर्थइस्ट के आठ राज्यों (7 बहने और 1 भाई) के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा उनकी संस्कृति, भाषा आदि का अवलोकन किया।

इस कार्यक्रम का संचालन RGU के प्रोफेसर डॉ. कौशलेन्द्र प्रताप सर ने किया। इस दौरान हम Zirove... sopovillage, Itofort, Gompa Moncistery तथा OJU School आदि स्थानों का भ्रमण किया। इस दौरान मेरे कई दोस्त बने जिनके साथ मुझे बहुत अच्छा लगा।

इस कार्यक्रम में हमने Cultural exchange Programm किए जो काफी मनमोहक थे। इसके साथ ही साथ RGU के प्रो. द्वारा हमें कई जानकारी दी गयी। तथा हमारे भविष्य के बारे में मार्गदर्शित किया। गोवा के विद्यार्थियों के साथ भी हमारी दोस्ती हुई। इन दिनों में हम सभी एक परिवार की तरह रहे जिसमें हमें बहुत खुशी हुई।

12 नवम्बर, 2025 को हमारी परीक्षा हुई जिसमें नॉर्थइष्ट से सम्बन्धित प्रश्न थे। साथ ही साथ हमने 3D Model भी तैयार किए जिसमें मेरा टॉपिक नागालैण्ड की संस्कृति व विकास पर था।

13 नवम्बर, 2025 को हमारा (हमने 3D मॉडल का प्रर्दशन किया) सांस्कृतिक प्रोग्राम था जिसमें हमने नॉर्थइस्ट का सांस्कृतिक नृत्य, गीत आदि प्रस्तुत किए। इसी दौरान हमारी परीक्षा का परिणाम भी जारी हुआ। जिसमें प्रथम स्थान दीपक और नैम्पी ने तथा द्वितीय स्थान प्रिंस मेहरा तथा रुचा परव ने प्राप्त किया व इन्हें पुरस्कार मिला।

कार्यक्रम के अन्त में हम सभी विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट तथा मोमेन्टो दिया गया तथा बच्चों द्वारा इस प्रोग्राम का अनुभव सांझा किया गया। 9:00 बजे को कैम्पफायर हुआ जिसमें गाने, डांस आदि के द्वारा सबने खुशी मनाई।

14 नवम्बर, 2025 को नाश्ता करने के पश्चात हम सभी विद्यार्थी तथा शिक्षक अरुणांचल के लोगों से विदा लेकर 10:00 बजे को ईटानगर एयरपोर्ट को चले गए। 2:30

बजे हमारी फ्लाइट दिल्ली को निकली और 5:30 बजे दिल्ली पहुंची। 6:00 बजे से हम हल्द्वानी के लिए निकले और 15 नवम्बर, 2025 को 3:30 बजे हल्द्वानी पहुंचे। वहां से सभी अपने-अपने घरों के लिए निकल गए।

यह कार्यक्रम हमारी जिन्दगी का काफी यादगार रहा। बहुत कुछ सीखा, सिखाया। इससे हमें नई-नई जानकारियां मिली तथा नॉर्थइस्ट का सुन्दर अनुभव प्राप्त किया।

दीपक कुमार
एम.ए. इतिहास प्रथम सेमे.

देवभूमि उद्यमिता केन्द्र
उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) 2025

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में देवभूमि उद्यमिता योजना अंतर्गत भारतीय उद्यमिता संस्थान अहमदाबाद और उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड के संयुक्त तत्वावधान में बारह दिवसीय दिनांक 19 मार्च से 01 मार्च 2025 तक उद्यमिता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डी.सी. पन्त ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और कहा कि छात्र-छात्रायें पढ़ाई के साथ-साथ उद्यमिता के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर पैदा करें। उद्यमिता कार्यक्रम की कार्यक्रम समन्वयक गीता बिष्ट ने अपने मूल वक्तव्य में कहा कि आज स्थानीय उत्पादों की बिक्री अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है। उन्होंने पिरूल, बुरांश और स्थानीय वनस्पतियों से निर्मित उत्पादों की बढ़ती माँग को रोजगार का स्वर्णिम भविष्य बताया। वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. नाजिश खान ने शिक्षा और नवाचार में उद्यमी होने के लाभ बताये। देवभूमि उद्यमिता योजना के नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए उद्यमियों के द्वारा राष्ट्र को उन्नति के, शिखर तक पहुँचाया जा रहा है। सहायक नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार ने स्थानीय उत्पादों के बाजारों में बढ़ती मांग पर वक्तव्य दिया। वनस्पति विभाग के प्राध्यापक डॉ. विपिन सुयाल ने पहाड़ी बिच्छु घास से बनने वाली चटनी खाद्य पदार्थो पर चर्चा की। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। उक्त कार्यशाला के समस्त बारह दिवसों में विद्यार्थियों को विभिन्न संदर्भदाताओं द्वारा व्याख्यान के साथ-साथ हैंड्स ऑन ट्रेनिंग भी दी गई। कार्यशाला के दूसरे दिन उद्यमी श्री महेंद्र सिंह रौतेला ने होम स्टे को स्वरोजगार की दिशा में सरकार का बेहतर कदम बताया, कहा कि वर्तमान में हमारी देवभमि में पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएं हैं। इस लिहाज से पर्यटक घर जैसी सुविधाएं चाहते हैं हमारे पर्वतीय क्षेत्र में होटल व्यवसाय के साथ-साथ होम स्टे व्यवसाय भी बहुत फल-फूल रहा है। प्रतिभागी छात्र-छात्राओं से तकनीकी सत्र में उन्होंने कई प्रश्न पूछे और उनका समाधान किया। कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर डी.सी. पन्त ने कहा कि स्वरोजगार से व्यक्ति अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी रोजगार मुहैया कराता है तथा नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, ऐपण कला, ताम्र उद्योग आदि क्षेत्रों में विकसित हो रहे रोजगार पर चर्चा की। इस दौरान उद्यमियों के जीवन संस्मरणों पर आधारित फिल्म भी दिखाई गई। उद्यमिता विकास कार्यशाला के तीसरे दिवस में नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने प्रस्तावना रखते हुए उत्तराखण्ड में जड़ी-बूटी आधारित उद्योगों पर व्याख्यान दिया तथा बताया कि उत्तराखण्ड में योग आयुर्वेद के बढ़ते कदमों के पीछे यहाँ की विविध वनस्पतियों में औषधीय गुण विद्यमान हैं। उन्होंने जड़ी बूटी के उद्यान विकसित करने हेतु उद्यमियों के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। सहायक नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि वर्तमान में बाजार स्थानीय हर्बल चाय मेंहदी आदि से फल-फूल रहे हैं। विभिन्न प्रजातियों की पौध रोपण से हर्बल गार्डन पर्यटकों को आकर्षित कर रहे

हैं। रिसोर्स पर्सन गीता बिष्ट ने हर्बल प्रोडक्ट निर्माण और प्रसार पर प्रशिक्षणार्थी छात्र-छात्राओं को विशद जानकारी दी।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में उद्यमिता प्रशिक्षण के चौथे दिवस में उद्यमी श्री सी.पी. जोशी ने धूप, अगरबत्ती निर्माण में स्थानीय रोजगार के अवसर के बारे में बताया तथा हैंड्स ऑन ट्रेनिंग भी दी गई। नवीन बिष्ट ने सीड फण्ड प्रोजेक्ट के बारे में बताया। उन्होंने मार्केटिंग सर्वे के विषय में उद्यमियों से चर्चा की। प्रशिक्षण के तकनीकी सत्र में उद्यमी छात्रा अंजली ने जूते की डिजाइन प्रस्तुत की। अन्य छात्राओं ने पर्वतीय अनाज की विभिन्न किस्मों की प्रदर्शनी लगाई। कार्यशाला के पाँचवे दिवस में क्रियात्मक प्रयोगों के आलोक में उद्यमी प्रशिक्षणार्थी छात्र-छात्राओं ने द्वाराहाट बाजार सर्वेक्षण किया। उद्यमियों से छात्र-छात्राओं ने उनकी व्यवसाय संबंधी जानकारी प्राप्त की। द्वाराहाट के गौचर, काली खोली, त्रिमूर्ति चौराहा, घटगाड़, पूजाखेत, दूनागिरी रोड़ आदि के अनेक व्यापारियों से साक्षात्कार कर उनके स्टार्टअप से कार्य प्रारम्भ करने की जानकारी ली। नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र और डॉ. अशोक कुमार द्वारा माल क्रय-विक्रय, खाता बही, मार्केट विपणन, माल खपत, व्यापार में लाभ आदि विषयों पर चर्चा की गई। छात्र-छात्राओं ने व्यापारियों को उनके उद्यम में नवाचार के प्रयोग कर लाभान्वित होने को कहा। प्रोग्राम कॉर्डिनेटर गीता बिष्ट ने बहुआयामी व्यवसाय और खुदरा व्यापार आदि की बारीकियों से परिचित कराया। डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि कंप्यूटरीकृत युग में इसके माध्यम से व्यवसाय की गुणवत्ता अच्छी हो रही है। नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने सब दुकानदारों को उनके उदार व्यवहार और कार्यक्रम में सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। कार्यशाला के छठे दिवस में प्रत्येक छात्र एवं छात्रा ने बाजार सर्वे की रिपोर्ट्स की समीक्षा की। समीक्षा के अवसर पर प्राचार्य प्रो. डी.सी. पन्त ने बताया कि हैंड्स ऑन ट्रेनिंग एवम् मार्केट ग्राउंड बेस सर्वे विद्यार्थियों को एक सक्रिय धरातल पर पारंगत करने में सहायक होगा। नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने छात्र-छात्राओं द्वारा सर्वे के दौरान जुटाये गए आंकड़ों एवम् तथ्यों पर चर्चा की कहा कि छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न व्यवसायियों से साक्षात्कार के दौरान उनके और ग्राहकों के बीच उदार संबंधों से लाभान्वित होने के तथ्य सामने आए। यह भी बताया कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होते हैं। वाणिज्य विभाग के प्रोफेसर सहायक नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार ने आय व्यय, बहीखाता, लॉग बुक, दैनिक माल आयात-निर्यात, लेज़र मेंटिनेंस मूल्य नियंत्रण एवं बाजार भाव, सर्राफा बाजार, मंडी भाव सब्जी बाजार, किराना बाजार आदि पर चर्चा की। सातवें दिवस में विषय विशेषज्ञ श्रीमती अनीता आर्य ने कुमाउनी लोक कला को स्वरोजगार में अपनाने के लिए एक बेहतर विकल्प बताया तथा एपण विधा का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया। पूरे कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बड़ी तल्लीनता से प्रतिभाग किया। कार्यशाला के नवम दिवस में प्रशिक्षणार्थियों को चौखुटिया स्थित INHERE संस्था भ्रमण हेतु ले जाता गया। संस्थान के निदेशक मनोज माहेश्वरी ने हर्बल उत्पादों के विषय में विस्तार से बताया। कहा कि आज हर्बल चाय से लेकर हर्बल जीवनशैली इख्तियार करने के लिए बड़ा बाजार समूह खड़ा है। चिन्मय शाह, प्रोग्राम लीडस् एंड सेकेट्री एन जी ओ ने पूरे विश्व में हर्बल उत्पादनशीलता की बढ़ती ख्याति को मनवता के लिए सुखद बताया। आज हर्बल गार्डन, हर्बल टी, हर्बल मेहंदी, हर्बल कैटरिंग, हर्बल पार्क सहित जीवन के विविध पहलुओं को हर्बल ने आत्मसात कर लिया है। कॉलेज नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने कहा कि नवागत पीढ़ी को हर्बल प्रोडक्ट के बारे में सम्यक जानकारी रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बाजार में तमाम हर्बल क्रीम वाशिंग मटेरियल की आज पुरजोर मांग है। सहायक नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार ने हर्बल थीम को पर्यटन से जोड़ते हुए उसके रोजगार के क्षेत्र में महत्ता को समझाया। प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर गीता बिष्ट ने उद्यमी छात्र- छात्राओं का परिचय हर्बल क्षेत्रों में अच्छा कार्य कर रहे लोगों से करवाया। इस दौरान छात्र छात्राओं को हर्बल प्रतिष्ठानों के दर्शन भी कराए। अंत में डॉ.

प्रकाश चन्द्र ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा दसवें दिन छात्र एवं छात्राओं का MSME पंजीकरण की प्रक्रिया श्री महेन्द्र सिंह रौतेला द्वारा की गई। ग्यारहवें दिन कार्यक्रम समन्वयक गीता बिष्ट ने छात्र-छात्राओं को परियोजना प्रस्ताव निर्माण की विस्तृत जानकारी दी। किस प्रकार स्वरोजगार को शुरू किया जाए कौन सी वित्तीय संस्थाओं द्वारा लाभार्जन किया जा सके इस बाबत भी व्यापक विचार विमर्श किया गया। बारह दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यशाला के समापन दिवस पर समस्त छात्र छात्राओं ने स्टाल लगाकर अपने उत्पाद को प्रस्तुत किया। कार्यशाला का समापन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो डी.सी. पन्त द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि कार्यशाला के परिणाम विद्यार्थियों के सुन्दर स्टॉल में दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने छात्र- छात्राओं की मेहनत की सराहना करते हुए विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए लोकल उत्पादों से मार्केटिंग की बढ़ती रुचि की चर्चा की। कहा कि आज अमेजन, फ्लिपकार्ट पर उद्यमियों द्वारा निर्मित वेस्ट मेटेरियल से बनी वस्तुओं की अच्छी मांग बाजार में है। गीता बिष्ट ने बारह दिवसों के दौरान किये गए सृजनात्मक कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। डॉ. अशोक कुमार ने बारह दिवसों की कार्यशाला की आख्या प्रस्तुत की। तनु जोशी, रिया और दीपक और राहुल ने अपनी स्टाल के उत्पादों के निर्माण से जुड़ी प्रक्रिया बताई। इस समापन कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों ने पिरूल से बने टोकरी वर्तन, बर्तनों की नक्काशी अल्पना डिज़ाइन मिट्टी के खिलौने स्थानीय अनाजों फलों के जैम, जैली, अचार, दालें गृहसज्जा की वस्तुओं आदि की स्वनिर्मित प्रदर्शनी लगाई। जिसका मूल्यांकन प्राचार्य प्रो. डी.सी. पंत और गिरधर बिष्ट व महाविद्यालय के प्राध्यापक एवम् पत्रकार बन्धुओं द्वारा किया गया। संचालन डॉ. हेमचंद्र दुबे द्वारा किया गया। नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश चन्द्र ने उद्यमी छात्र-छात्राओं की रूचि और कार्यों की सराहना की तथा समस्त महाविद्यालय परिवार का धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. प्रकाश चन्द्र
नोडल अधिकारी

Anti-Ragging Cell

(Induction Meeting Report)

आज दिनांक 12 दिसम्बर, 2025 अर्थात् शुक्रवार को स्व. श्री म.मो. उपाध्याय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट में एंटी-रैगिंग सेल के तत्वावधान में एक "Induction Meeting" का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. पन्त ने कहा कि एंटी-रैगिंग सेल के माध्यम से छात्र-छात्राओं को सभी प्रकार की सुरक्षा प्रदान की जाती है। उन्होंने इस बात को दोहराया कि द्वाराहाट महाविद्यालय में एंटी-रैगिंग का मामला अभी तक नहीं आया है। इस महाविद्यालय की एंटी-रैगिंग समिति के सदस्य समय-समय पर छात्र-छात्राओं को सुन्दर एवं सद्भावपूर्ण वातावरण निर्माण के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

कार्यक्रम में सिविल न्यायालय, द्वाराहाट के अधिवक्ता श्री भाष्कर पन्त ने कहा कि रैंगिंग से संबंधित घटनाओं से छात्र-छात्राओं में आत्महत्या की प्रवृति बढ़ रही है। रैगिंग में सीनियर छात्र-छात्राएँ जूनियर छात्र-छात्राओं का उत्पीड़न करते हैं। ऐसी घटनाएँ जूनियर छात्र-छात्राओं का उत्पीड़न करते हैं। ऐसी घटनाएँ संस्थाओं के लिए अभिशाप होती हैं। उन्होंने रैंगिंग रोकने के लिए कानून में उपलब्ध विभिन्न धाराओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि यदि एंटी-रैगिंग की घटना कहीं घटती है तो देश के कानून में इसको रोकने हेतु व्यापक प्रावधान किये गये हैं।

इस मौके पर स्थानीय पत्रकार श्री ललित मोहन सिंह बिष्ट ने विचार व्यक्त किया कि तकनीकी और मेडिकल उच्च शिक्षण संस्थानों में रैगिंग की घटना को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने पर्याप्त नियम बनाए हैं उन्होंने कहा कि फिलहाल कॉलेज स्तर पर ऐसी घटनाएँ कम देखने को मिल रही हैं। इसके बावजूद भी इस घटना के प्रति छात्रों और

उसके अभिभावकों को जागरूक करते रहना आवश्यक है। एंटी-रैगिंग समिति के सदस्य एवं स्थानीय अभिभावक श्री कैलाश चन्द्र जोशी ने कहा कि छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय में स्वच्छ एवं सुन्दर वातावरण तैयार करके नव आगन्तुक छात्रों का फूल-मालाओं से स्वागत करना चाहिए। उनके साथ सद्भाव एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, जिससे उनके मन में अपने प्रति असुरक्षा की भावना पैदा न हो। कार्यक्रम का संचालन करते हुए एंटी-रैगिंग सेल के संयोजक डॉ. अंचलेश कुमार ने इसके ऐतिहासिक पहलुओं पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी एवं बताया कि कॉलेज स्तर पर गठित एंटी-रैगिंग समिति समय-समय पर छात्रों की काउंसलिंग करती रहती है। ऐसा करने से कॉलेज में ऐसी घटनाएँ नहीं हो पाती हैं। इन्होंने यह भी उल्लेख किया कि अपना महाविद्यालय यू.जी.सी. के एंटी-रैगिंग पोर्टल पर पंजीकृत है और कोई भी शिकायत इसमें ऑनलाईन दर्ज की जा सकती है। इसके बाद प्रकरण पर कार्यवाही प्रारम्भ होती है। महाविद्यालय की मुख्य अनुशास्ता एवं एंटी-रैगिंग सेल के सदस्य डॉ. नाजिश शान ने कहा कि गुपचुप तरीके से रैगिंग की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। अधिकांश मामलों में रैगिंग संबंधी घटनाएँ प्रकाश में नहीं आती हैं जिससे उनके दुष्प्रभाव संस्थाओं को बिगाड़ देते हैं। अंत में कॉलेज के मीडिया सेल के सदस्य डॉ. हेम चन्द्र दुबे ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री सी.एस. कठायत, डॉ. सुमन गढ़िया, प्रियंका लोकेश जोशी, श्री कुलदीप सिंह व निकिता त्रिपाठी समेत छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

एंटी-रैगिंग सेल के सदस्यों के नाम

(1) डॉ. अंचलेश कुमार (संयोजक)
(2) डॉ. नाजिश खान (सदस्य)
(3) डॉ. सुमन गढ़िया (सदस्य)
(4) डॉ. प्रणवीर प्रताप (सदस्य)
(5) कु. अंजली (सदस्य)
(6) श्री सी.एस. कठायत (सदस्य)
(7) कु. प्रियंका (सदस्य)

Patents: Protecting Innovation in India and Uttarakhand

"Patents are engines of progress, balancing innovation with public interest."

A patent is a legal right granted to an inventor for a new product or process that offers a novel solution to a problem. Patents are crucial for encouraging innovation, protecting investments, and driving economic growth. A patent is a cornerstone of intellectual property rights. It grants inventors exclusive rights to their creations for a limited period, usually 20 years, preventing others from making, using, or selling the invention without consent. In return, inventors must disclose their invention publicly, ensuring that knowledge is shared and progress continues. Patents balance two goals: rewarding creativity and benefiting society.

Patents in India

India's patent system is governed by the Patents Act, 1970, amended in 2005 to align with global standards under the TRIPS Agreement. Administered by the Office of the Controller General of Patents, Designs & Trade Marks (CGPDTM) under the Ministry of Commerce & Industry. An invention must be novel, involve an inventive step, and have industrial application. Discoveries, abstract ideas, traditional knowledge, and certain medical methods cannot be patented. India recorded nearly 92,000 patent filings in FY 2023–24, with over 51,500 filed by Indian applicants, showing a surge in domestic innovation. The Bayer v. Union of India case (2009) upheld compulsory licensing for a cancer drug, balancing innovation with public health

India has seen patents across diverse fields. Affordable drug innovations with compulsory licensing to ensure access. IIT Madras startup Agnikul Cosmos patented the world's largest 3D-printed rocket engine. This innovation put India on the global space-tech map.

The "Haldi Patent" refers to a famous case in the late 1990s when U.S. researchers tried to patent turmeric (haldi) for its wound-healing properties. India

successfully challenged this, making it a landmark victory in protecting traditional knowledge. The Haldi Patent case is a milestone in India's intellectual property history. It showed the world that traditional knowledge is valuable, must be respected, and cannot be claimed as a "new invention" by outsiders. It also strengthened India's resolve to safeguard its cultural and scientific heritage.

A U.S. company attempted to patent basmati rice varieties. India fought back, arguing basmati was a geographical indication (GI) tied to the Indian subcontinent. This case highlighted the importance of GI protection alongside patents. The Neem Patent case is one of India's most famous battles against biopiracy, where traditional knowledge was defended and a foreign patent was revoked. European companies patented neem-based fungicides. India contested, showing neem's traditional use in agriculture. The patent was revoked in 2000, reinforcing protection of indigenous knowledge.

Alongside these well-known examples, our college has also contributed to India's innovation ecosystem. My recent research patent on "A phytochemical rich herbal extract and process of extraction thereof" is a part of this.

Uttarakhand has a dedicated Patent Information Center (PIC) under UCOST (Uttarakhand State Council for Science & Technology) that supports innovators with patent filing, awareness, and commercialization. The state also provides IP support through Startup Uttarakhand, making it easier for entrepreneurs, researchers, and students to protect their inventions

Patents are significant because they protect inventions, encourage innovation, and drive economic and social progress. They give inventors exclusive rights for a limited time, allowing them to benefit from their creativity while ensuring society gains from shared knowledge. Patents are vital for protecting creativity, fostering entrepreneurship, boosting economies, and sharing knowledge. They balance the inventor's right to profit with society's need for progress, making them a cornerstone of modern innovation systems.

Dr. Swati Joshi
Asstt. Prof. Botany Department

Nurturing Future Leadership Programme-Batch 5 Under Malviya Mission Teacher Training Programme 15-19 December 2025

डॉ. आशा बी. पारछे
असि. प्रोफे. वाणिज्य संकाय

प्रस्तावना – आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे नेतृत्वकर्ता, मार्गदर्शक एवं संस्थान निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), काशीपुर द्वारा मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत Nurturing Future Leadership Programme (Batch-5) का आयोजन दिनांक 15 दिसंबर 2025 से 19 दिसंबर 2025 तक किया गया। यह पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता, नेतृत्व क्षमता तथा शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। राजकीय महाविद्यालय, द्वाराहाट से इसमें कॉमर्स फैकल्टी की डॉ. आशा पारछे ने प्रतिभाग किया।

प्रशिक्षण का उद्देश्य – इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को नेतृत्व विकास, संस्थागत प्रबंधन, शैक्षणिक नवाचार एवं रणनीतिक सोच के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम का लक्ष्य शिक्षकों में ऐसी क्षमताओं का विकास करना था जिससे वे अपने-अपने संस्थानों में शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ कर सकें। इसके अतिरिक्त शिक्षकों को डिजिटल युग की चुनौतियों से निपटने, वित्तीय एवं प्रशासनिक निर्णय लेने तथा छात्रों के समग्र विकास में प्रभावी भूमिका निभाने हेतु प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण

का एक प्रमुख उद्देश्य उद्योग एवं अकादमिक जगत के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना तथा शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनान भी था।

प्रशिक्षण के विषय एवं शैक्षणिक संरचना- प्रशिक्षण कार्यक्रम के सुव्यवस्थित एवं चरणबद्ध रूप से संचालित किया गया। प्रथम दिवस पर उद्घाटन सत्र एवं आइस-ब्रेकिंग गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को कार्यक्रम के उद्देश्यों से अवगत कराया गया। इसके पश्चात स्टेकहोल्डर एंगेजमेंट, संस्थागत दृष्टि एवं मिशन, वित्तीय प्रबंधन, बजट निर्माण तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। द्वितीय दिवस पर डिजिटल युग में संस्थान की ब्रांडिंग, प्रदर्शन प्रबंधन, नेतृत्व कौशल, प्रभावी संप्रेषण तथा पुस्तकालय संसाधनों के उपयोग पर विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया गया। तृतीय दिवस पर आत्म-प्रबंधन एवं टीम प्रबंधन, कंटेंट से क्रिएशन तक शिक्षण की प्रक्रिया तथा उद्योग-अकादमिक सहयोग के महत्व को समझाया गया। चतुर्थ दिवस में डिज़ाइन थिंकिंग, डिजिटलाइजेशन के प्रभाव, अकादमिक संस्थानों में परिवर्तन की आवश्यकता तथा रणनीतिक नेतृत्व जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया। अंतिम दिवस पर शोध एवं परामर्श परियोजनाओं की योजना, संस्थान को पर्यावरणीय रूप से सतत बनाने तथा संघर्ष प्रबंधन एवं सकारात्मक संबंध निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान दी गई जानकारी एवं गतिविधियाँ - प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, उदाहरण, केस स्टडी एवं अनुभव साझा किए गए, जिससे विषयों को व्यवहारिक रूप में समझने में सहायता मिली। शिक्षकों को यह बताया गया कि किस प्रकार संस्थान की स्पष्ट दृष्टि एवं मिशन तय कर शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। वित्तीय प्रबंधन सत्र में बजट निर्माण संसाधनों के प्रभावी उपयोग तथा वित्तीय अनुशासन के महत्व को स्पष्ट किया गया। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्यम से यह समझाया गया कि शिक्षक किस प्रकार छात्रों की भावनाओं को समझकर उन्हें बेहतर मार्गदर्शन दे सकते हैं।

डिजिटल युग में शिक्षा की भूमिका को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन टूल्स, डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं तकनीकी संसाधनों के उपयोग पर बल दिया गया। उद्योग-अकादमिक सहयोग सत्रों में यह स्पष्ट किया गया कि संस्थान किस प्रकार उद्योगों से जुड़कर छात्रों को व्यावहारिक अनुभव एवं रोजगार के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण संरक्षण, ग्रीन कैंपस एवं सतत विकास जैसे विषयों पर भी महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

महाविद्यालय के लिए प्रशिक्षण की उपयोगिता- यह प्रशिक्षण कार्यक्रम महाविद्यालय के समग्र विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। इससे शिक्षकों में नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता एवं रणनीतिक सोच का विकास होगा, जिससे संस्थान का प्रशासनिक एवं शैक्षणिक कार्य अधिक प्रभावी बनेगा। डिजिटल शिक्षा एवं नवाचार के प्रयोग से शिक्षण गुणवत्ता में वृद्धि होगी तथा संस्थान की पहचान एवं प्रतिष्ठा को नया आयाम मिलेगा। वित्तीय प्रबंधन एवं शोध परियोजनाओं से संस्थान की आर्थिक स्थित सुदृढ़ होगी। साथ ही पर्यावरणीय स्थिरता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में भी महाविद्यालय आगे बढ़ सकेगा।

छात्र-छात्राओं के लिए प्रशिक्षण की उपयोगिता- प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान का प्रत्यक्ष लाभ छात्र-छात्राओं को प्राप्त होगा। प्रशिक्षित शिक्षक अधिक प्रभावी, रोचक एवं व्यवहारिक शिक्षण प्रदान कर सकेंगे, जिससे छात्रों की सीखने की रुचि बढ़ेगी। उद्योग-अकादमिक सहयोग से छात्रों को रोजगारोन्मुख शिक्षा, इंटर्नशिप एवं करियर मार्गदर्शन प्राप्त होगा। डिजिटल संसाधनों के उपयोग से छात्रों को नवीनतम ज्ञान एवं तकनीकी दक्षता मिलेगी। इसके परिणामस्वरूप छात्रों का शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित होगा।

निष्कर्ष- अंतत: यह कहा जा सकता है कि भारतीय प्रबंधन संस्थान, काशीपुर द्वारा आयोजित यह पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं व्यावहारिक रहा। इस प्रशिक्षण ने शिक्षकों को न केवल शैक्षणिक दृष्टि से समृद्ध किया, बल्कि उन्हें नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित होने की दिशा भी प्रदान की। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के विकास, छात्रों के उज्ज्वल भविष्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

महाविद्यालय एनसीसी,एनएनएस, रोवर्स–रेंजर्स तथा यूथ रेड क्रॉस इकाईओ द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

Government Post Graduate College Dwarahat

Skill Awareness Campaign

She for STEM Program

11 August 2025

Government Post Graduate College Dwarahat

Dr Rizwana Tabassum
Assistant Professor Botany
and BSc V Semester Student
Bhawana Negi attended
the Workshop.

BSc V Semester Student
Bhawana Negi is selected
as a top scorer in the She
for STEM Program.

World Submit on Disaster management
Organised by Graphic Era University Dehradun (28-30 Nov 2025)

She for STEM is an
Umbrella aims to
promote and
Support women in
Science, Technology,
Engineering and
Mathematics (STEM)

Government Post Graduate College Dwarahat

She for STEM Program

11 August 2025

Government Post Graduate College Dwarahat

Dr Rizwana Tabassum Attended the meet with College Student

Organised by Graphic Era University Dehradun

World Summit on Disaster Management (28-30 Nov 2025)

STEM Program

महाविद्यालय पत्रिका "उन्नयन" का विमोचन

सचिव उच्च शिक्षा डॉ रंजीत कुमार सिन्हा सर द्वारा द्वाराहाट महाविद्यालय का भ्रमण (16 सितम्बर, 2025)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट

सचिव उच्च डॉ रंजीत कुमार सिन्हा सर द्वारा द्वाराहाट महाविद्यालय का भ्रमण

सचिव उच्च शिक्षा डॉ रंजीत कुमार सिन्हा सर को प्रतीक चिन्ह एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ डी सी पंत एवं समस्त प्राध्यापक एवं कर्मचारी

(16 सितम्बर, 2025)

द्वाराहाट महाविद्यालय में हुआ दीक्षारंभ कार्यक्रम

वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रियंका ने मारी बाजी

निबंध में दीपा प्रथम

दैनिक जागरण (19 दिसम्बर 2025)

द्वाराहाट महाविद्यालय में पीजी ब्लाक व अत्याधुनिक लैब निर्माण की पहल शुरू

'बौद्धिक अधिकारों का कानूनी संरक्षण जरूरी'

प्राध्यापक डा. रिजवाना व डा. स्वाति बेंगलुरु में सम्मानित

समर्पण, अनुशासन व नेतृत्व के लिए किया सम्मानित

द्वाराहाट में एनसीसी कैडेट्स को रैंक लगाकर सम्मानित किया गया। जागरण

संस, जागरण, द्वाराहाट : राजकीय महाविद्यालय में एनसीसी कैडेट्स का रैंक एवं विदाई समारोह हुआ। इसमें उत्कृष्ट कैडेट्स व अधिकारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डा. डीसी पंत ने किया। उन्होंने सामाजिक क्रियाकलापों तथा शिक्षा के क्षेत्र में एनसीसी के योगदान को सराहा। चालू सत्र में एनसीसी के संचालन के लिए उषा बिष्ट को सीनियर अंडर आफिसर, सूरज सिंह तथा हेमलता को अंडर आफिसर, कुमकुम किरौला को सार्जेंट नियुक्त किया गया। जबकि कारपोरल पदक अधिकारी हिमांशु आगरी को रैंक प्रदान की गई। प्रभारी लेफ्टिनेंट ...

अमर उजाला (19 दिसम्बर, 2025)

द्वाराहाट कॉलेज में पीजी ब्लॉक बनने की उम्मीद

महाविद्यालय प्रबंधन उच्च शिक्षा विभाग को भेजेगा प्रस्ताव

सिविल जज ने साइबर सुरक्षा को किया सजग

सचिव से विषयों की स्वीकृति की मांग

द्वाराहाट में उच्च शिक्षा सचिव ने मंगलवार को निरीक्षण कर जानकारियां लीं।

द्वाराहाट में शनिवार को पद और गोपनीयता की शपथ लेते विजयी प्रत्याशी।

द्वाराहाट में निर्दलीय प्रत्याशियों का कब्जा

द्वाराहाट। डिग्री कॉलेज द्वाराहाट में शनिवार को हुए छात्र संघ चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशियों ने परचम लहराया। अध्यक्ष पद पर नीरज किरौला ने एबीवीपी दीया उपाध्याय 231 वोट से हराया। इसके अलावा उपाध्यक्ष पद में अमित सिंह भंडारी, सचिव में सूरज सिंह, कोषाध्यक्ष में भरत भंडारी, छात्रा उपाध्यक्ष में तनु जोशी व विवि प्रतिनिधि नेहा रावत बनीं। प्राचार्य प्रो. डीसी पंत ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

हिन्दुस्तान 29 सितम्बर 2025

द्वाराहाट में शनिवार को डिग्री कॉलेज का निरीक्षण हुआ।

उच्च शिक्षा निदेशक ने निरीक्षण किया

द्वाराहाट। डिग्री कॉलेज उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. अंजू अग्रवाल ने निरीक्षण किया। प्राचार्य डॉ. डी.सी. पंत ने स्वागत किया। निदेशक ने पाया कि यहां बीए, बीएससी, बीकॉम, एमए, एमएससी की कक्षाएं निर्धारित समय सारणी से संचालित हो रही हैं। यहां डॉ नाजिश खान, डॉ अंचलेश कुमार, डॉ उपासना शर्मा, डॉ पूनम पंत, डॉ अंजुम अली, डॉ निदोषिता, डॉ राजेश प्रसाद, डॉ विपिन सुयाल, चंदन कठायत, चंद्रा आदि थे।

हिन्दुस्तान 06 अक्टू. 2025

अंग्रेजी, हिंदी और अर्थशास्त्र विषय की स्वीकृति देने की मांग

अमर उजाला (15 अक्तूबर 2025)

द्वाराहाट महाविद्यालय में प्रोजेक्ट गौरव योजना शुरू

नीरज किरौला अध्यक्ष, सूरज सिंह सचिव बने

द्वाराहाट महाविद्यालय में छात्रसंघ के नव निर्वाचित पदाधिकारी।

उच्च शिक्षा निदेशक ने जांचे अभिलेख, उपस्थिति भी देखी

द्वाराहाट महाविद्यालय का निरीक्षण कर सभी व्यवस्थाएं परखीं

फ्रेशर्स कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने बांधा समां

द्वाराहाट डिग्री कॉलेज में मंगलवार को परीक्षा से पूर्व जांच करते शिक्षक।

द्वाराहाट कॉलेज में सेमेस्टर परीक्षाएं प्रारम्भ

राज्य स्थापना रजत जयंती समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची

द्वाराहाट कॉलेज में योग प्रशिक्षण शुरू

योग करते प्राध्यापक और अन्य लोग।

प्रतिदिन विद्यार्थियों प्राध्यापकों और कर्मचारियों को योगाभ्यास करा रहे हैं। उन्होंने कहा कि योग से शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है और युवाओं में योग के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी। संवाद

फ्रेशर्स में रंगारंग कार्यक्रमों की हुई प्रस्तुति

दैनिक जागरण, 10 नवम्बर 2025

सरकारी कार्यालयों में गूंजा वंदे मातरम

द्वाराहाट में शनिवार को डॉ. अंचलेश की लिखित पुस्तक का विमोचन हुआ।

डॉ. अंचलेश की लिखित पुस्तक का विमोचन

द्वाराहाट। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट के समाजशास्त्र विभाग में प्रभारी डॉ. अंचलेश कुमार की लिखित पुस्तक कार्यशील महिलाएं एवं भूमिका संघर्ष का विमोचन हुआ। यहां महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डीसी पंत, प्रो. नाजिश खान, डॉ. हेमचंद्र दुबे, डॉ. उपासना शर्मा, डॉ. पूनम पंत, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. आशा, डॉ. प्रमलता त्रिपाठी, डॉ. शैलेंद्र कुमार, डॉ. अंजुम अली आदि रहे।

द्वाराहाट डिग्री कॉलेज में पीटीएम का गठन

अमर उजाला 01 नवम्बर 2025

न्यूज डायरी

बौद्धिक संपदा अधिकारों पर हुई चर्चा

द्वाराहाट (अल्मोड़ा)। महाविद्यालय द्वाराहाट में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के एक दिवसीय शिविर में बौद्धिक संपदा अधिकारों पर विस्तृत चर्चा की गई। प्राचार्य डॉ. डीसीपंत ने कहा कि राष्ट्र की सच्ची सेवा शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भागीदारी से होती है। पहले सत्र में स्वयंसेवकों ने महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया और गाजर घास व झाड़ियों को हटाया। दूसरे सत्र में नोडल अधिकारी विपिन चंद्र सुयाल ने पेटेंट कानून और बौद्धिक संपदा अधिकारों की उपयोगिता बताई। डॉ. स्वाति जोशी ने ब्रांड पहचान और उपभोक्ता जागरूकता पर जोर दिया, जबकि डॉ. शैलेंद्र कुमार ने कॉपीराइट व पेटेंट कानून से जुड़ी कानूनी जानकारियां साझा कीं। शिविर का संचालन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुमन गड़िया ने किया। संवाद

महाविद्यालय स्वीप एवं यूथ पार्लियामेंट

महाविद्यालय छात्र संघ 2025-26

निर्वाचित पदाधिकारी

नीरज किरौला
अध्यक्ष

अमित सिंह भण्डारी
उपाध्यक्ष

तन्नू जोशी
छात्रा उपाध्यक्ष

सूरज सिंह
सचिव

भरत भण्डारी
कोषाध्यक्ष

नेहा रावत
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

मनोनीत पदाधिकारी

चित्रा बिष्ट
स्नातकोत्तर में अधिकतम अंक

हेमलता
स्नातक कक्षा में अधिकतम अंक

प्रेरणा बोरा
NSS के उत्कृष्ट स्वयंसेवी

उषा बिष्ट
NCC में उत्कृष्ट प्रदर्शन

करन साह
क्रीड़ा प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन

प्रियंका आर्या
सांस्कृतिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन

प्राध्यापक वर्ग

प्रथम पंक्ति दायें से बायें- डॉ. महेन्द्र सिंह, डॉ. उपासना शर्मा, डॉ. अंचलेश कुमार, डॉ. डी.सी. पन्त (प्राचार्य), डॉ. नाजिस खान, डॉ. अंजुम अली, डॉ. भावना पन्त।

द्वितीय पंक्ति दायें से बायें- डॉ. भगवती प्रसाद बहुगुणा, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. भूपेन्द्र कुमार, डॉ. प्रकाश चन्द्र, डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी, डॉ. स्वाति जोशी, डॉ. रिज़वाना तबस्सुम, डॉ. सुमन गड़िया।

तृतीय पंक्ति दायें से बायें- डॉ. प्रणवीर प्रताप, डॉ. शेलेन्द्र कुमार, डॉ. हेम चन्द्र दूबे, डॉ. विपिन सुयाल, डॉ. रेनू, डॉ. अंजलि, डॉ. निर्दोषिता बिष्ट, डॉ. देवजनी अधिकारी।

सम्पादक मण्डल

(बायें से दायें): डॉ. हेम चन्द्र दूबे, डॉ डी.सी. पन्त, प्राचार्य, डॉ. नाज़िस खान, डॉ. पूनम पन्त।

कार्यालय स्टाफ

प्रथम पंक्ति दायें से बायें- श्रीमती ममता भट्ट, श्री हरीश सिंह, डॉ. डी.सी. पन्त, प्राचार्य, श्री चन्दन सिंह कठियात, प्रशासनिक अधिकारी, श्री वैभव, श्रीमती चन्द्र चौहान।

द्वितीय पंक्ति दायें से बायें- श्री भूपाल सिंह, श्रीमती दीपा बेलवाल, श्री संतोष जोशी, श्री रमेश जोशी, श्री अनिल कुमार, कुमारी प्रियंका जोशी।

तृतीय पंक्ति दायें से बायें- श्री भूपेन्द्र बजेठा, श्री मनोज नाथ, श्री जीवन सिंह, श्री नरगिरी, श्री कुलदीप अधिकारी,